स्पन्दन

अंक 2, सितम्बर 2016

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

संस्थान गान

''नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नम्याम्ह्यम्।।''

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज।।

श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर में भी प्रीति जगाई।
ताजमहल पर गर्व हमें है, जग भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजाएं साज़।।

मलिन हो गई धरा आज फिर, उसको पुनः सजाएं।
हरित शिल्प से चलो सृजन का, नारा हम दोहराएं।।
सोये आदर्शों को आओ, सब मिल पुनः जगाएं।
नूतन सृजन हो शिव सृजन, दुनिया में पहुँचाएं।।

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
एस.पी.ए. के छात्र करेंगे, नवयुग का आगाज़।।

संस्थान गीत

ढूंढ रहा था, इक नया उजाला,
फिर मिला तू, इस नयी राह में।
तू ही जिन्दगी, तू ही मंजिल,
तू ही हर खुशी, इस दास्तान में।

ये ज़मीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे...एसपीए, भोपाल।

तेरी दुआ से, कुछ बन जाऊंगा,
तेरे नाम को, मिटने ना दूंगा।
जहां जहां पर, मेरे कदम पड़ेंगे,
वहाँ तेरा फिर, निशां दिखेगा।

ये ज़मीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे...एसपीए, भोपाल।

निदेशक का संदेश ...

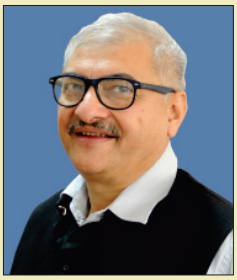

हमारा जीवन हमारे विचारों से चलता है। हर विचार एक बीज की तरह होता है, जो हमारे दृष्टिकोण और व्यवहार रूपी पेड़ का निर्माण करता है। सकारात्मक सोच के बिना जिंदगी अधूरी है व इसकी शक्ति से घोर अंधकार को भी आशा की किरणों व रोशनी में बदला जा सकता है। हमारे विचारों पर हमारा स्वयं का नियंत्रण होता है इसलिए यह हमें स्वयं ही तय करना होता है कि हमें सकारात्मक सोच रखनी है या नकारात्मक।

शिक्षा हमारे जीवन में बड़ा बदलाव लाती है। शिक्षा से हम अपने पुरूषार्थ एवं भविष्य का निर्माण करते हैं किंतु याद रखें किताबें पढ़ लेने से या अच्छे शब्द सुन लेने से कोई फायदा नहीं जब तक कि आप उनको अपने व्यवहारिक जीवन में नहीं अपनाते।

संस्थान की हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के दूसरे अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है। प्रथम अंक पर पाठकों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया के लिये सभी को धन्यवाद।

संविधान के अनुच्छेद 351 में निर्धारित किया गया है ''अष्टम् अनुसूची में वर्णित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पद बंधों को आत्मसात करते हुए ..... हिंदी भाषा का विकास करना संघ सरकार का दायित्व है।''

मैं उम्मीद करता हूँ संस्थान हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के माध्यम से हिंदी भाषा के विकास में सार्थक भूमिका निभाता रहेगा। पत्रिका के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

चेतन वैद्य

(चेतन वैद्य)

द्वितीय दीक्षांत समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय (एस.पी.ए.), भोपाल का द्वितीय दीक्षांत समारोह 4 अक्टूबर 2015 को आयोजित हुआ। दीक्षांत समारोह का आरम्भ संस्थान गान से हुआ। कार्यक्रम के शुभारम्भ की घोषणा संस्थान के निदेशक प्रो. विनोद कुमार सिंह ने स्वागत ज्ञापन व प्रतिवेदन से की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आई.आई.टी. कानपुर के पूर्व निदेशक पद्मश्री प्रो. संजय गोविंद धांडे ने दीक्षांत समारोह को संबोधित किया।

दीक्षांत समारोह में वर्ष 2010, 11 के बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर, बैचलर ऑफ प्लानिंग व 13 बैच के मास्टर आफ आर्किटेक्चर (अर्बन डिजाइन), मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (कन्जर्वेशन), मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (लैंड्स्केप), मास्टर ऑफ प्लानिंग (अर्बन एवं रीजनल प्लानिंग), मास्टर ऑफ प्लानिंग (इन्वायरमेंटल प्लानिंग) के कुल 149 स्नातकों को उपाधि दी गई जिनमें से 129 स्नातक दीक्षांत समारोह में स्वयं उपस्थित थे। दीक्षांत समारोह में वर्ष 2010, 11 व 13 शैक्षणिक सत्र के सात स्नातकों को स्नातक व परा–स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए प्रवीणता स्वर्ण पदक दिये गये।

वर्ष 2010 शैक्षणिक सत्र के वास्तुकला से स्नातक सिद्धार्थ मंडल को चेयरपर्सन मेडल दिया गया।

साउथ एशियन स्टूडेंट डिज़ाइन प्रतियोगिता (SASDC) एवं साउथ एशियन वर्नाकुलर आर्किटेक्चर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (SAVA)

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय (S.P.A.) भोपाल द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (I.G.R.M.S.) एवं भारतीय ग्रामीण विरासत एवं विकास ट्रस्ट (I.T.R.H.D.) के सहयोग से दक्षिण एशियाई छात्र डिज़ाइन प्रतियोगिता (SASDC-2015) का आयोजन दिनांक 10 दिसम्बर 2015 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के परिसर में किया गया। प्रतियोगिता में

भाग लेने हेतु विभिन्न वास्तुकला विद्यालयों से 60 से अधिक छात्रों ने पंजीयन कराया। प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागी को प्रथम 80,000/– रूपये, द्वितीय 50,000/– रूपये एवं तृतीय 30,000/– रूपये की पुरस्कार राशि प्रदान की गई।

इसी तारतम्य में दक्षिण एशिया के स्थानीय वास्तुकला पर केंद्रित सम्मेलन (SAVA) का आयोजन दिनांक 11–13 दिसम्बर 2015 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के परिसर में किया गया। सम्मेलन की मुख्य अतिथि माननीय श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया जी, मंत्री, वाणिज्य उद्योग एवं रोजगार, सार्वजनिक उपक्रम, खेल और युवक कल्याण, धार्मिक न्यास और धर्मस्व विभाग मध्य प्रदेश थीं। कार्यक्रम का शुभारंभ देश की जानी मानी इंटीरियर डिज़ाइनर और एस.पी.ए. भोपाल की बोर्ड ऑफ गर्वनर की पूर्व अध्यक्षा पद्मश्री श्रीमती सुनीता कोहली ने किया।

उक्त प्रतियोगिता एवं सम्मेलन में दक्षिण एशिया के देश भारत, नेपाल, पाकिस्तान, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, अफगानिस्तान और मालदीव से वास्तुविद्, कलाकार, क्राफ्ट्समैन, डिजाइनर, शिक्षाविद्, उद्यमी आदि ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्देश्य स्थानीय वास्तुकला की चुनौतियों की जाँच एवं भविष्य के लिए अपनी निरंतरता और अनुकूलन हेतु रणनीति विकसित करने हेतु रखा गया था।

नोस्प्लान

संस्थान के योजना विभाग के छात्रों ने इंजीनियरिंग कॉलेज पुणे में आयोजित सत्रहवें नोस्प्लान कन्वेंशन में लगातार दूसरी बार जीत हासिल की। छात्रों ने लगातार द्वितीय वर्ष में भी आईटीपीआई से सर्वश्रेष्ठ थीसिस पुरस्कार हासिल किया एवं प्रथम बार अंतर्विद्यालय शैक्षिक एवं पाठ्येतर प्रतियोगिता ''सिमबायोसिस'' की व्यवस्था की। विभाग के संकाय सदस्यों ने स्पेन, जापान, नीदरलैण्ड में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया।

सुगम्य भारत अभियान

रेडक्रास सोसाइटी, रीवा (म.प्र.) के तत्वाधान में दिनाँक 10 जनवरी 2016 को भारत के होनहार देशव्यापी अभियान (सुगम्य भारत अभियान) के अन्तर्गत एक संगोष्ठी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जिला स्तरीय स्कूल के अध्यापकों को वास्तुकला की दृष्टि से अवरोध मुक्त विद्यालय का निर्माण कैसे किया जाए और सभी स्तर के छात्र/छात्राओं को कैसे सर्व–सुविधाएँ प्रदान की जाएं, आदि बातों पर जोर दिया गया। योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के सहायक प्राध्यापक (वास्तुकला) श्री सुशील कुमार सोलंकी ने इस विषय के संबंध में वास्तुकला की नई तकनीकों और निर्माण कार्यों में मापदण्डों को कैसे उपयोग में लाया जाए के बारे में जानकारी दी।

एस.पी.ए. शासी मण्डल के अध्यक्ष का दौरा

प्रो. विमल पटेल दिनांक 13 जनवरी 2016 से मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के शासी मण्डल के अध्यक्ष के रूप में नामित किये गए हैं। संस्थान में उनका प्रथम दौरा दिनांक 13 मार्च 2016 को हुआ। प्रो. पटेल ने संस्थान के निदेशक (अतिरिक्त प्रभार) श्री चेतन वैद्य, कुलसचिव श्री राजेश मौजा, अधिष्ठातागण, विभाग प्रमुख, संकाय सदस्य एवं संस्थान के अन्य स्टाफ के साथ मुलाकात की। उन्होंने संस्थान परिसर में छात्रों की प्रदर्शनियों का अवलोकन एवं मूल्यांकन किया।

सिमबायोसिस कार्यशाला एवं प्रतियोगिता

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल द्वारा शहरी योजनाकार संस्थान ITPI, सागर ग्रुप एवं सिग्नेचर ग्रुप के सहयोग से सिमबायोसिस (Symbiosis) कार्यशाला एवं प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 09–10 अप्रैल इस कार्यशाला एवं प्रतियोगिता में मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, (MANIT) भोपाल एवं योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के सभी स्नातकोत्तर छात्रों ने भाग लिया। सिमबायोसिस 2016 की थीम ''प्रजा सुखे सुखम राज्यः, प्रजा नामचा हिते हितम्'' रखी गई थी। उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सागर अग्रवाल, सागर ग्रुप भोपाल, श्री सुमित गोठे, सदस्य आईटीपीई, श्री मनोज शर्मा, इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स एवं श्री विपिन चौहान, सिगनेचर ग्रुप थे। सिमबायोसिस 2016 में एस.पी.ए. भोपाल के निदेशक, अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापकगणों के सहयोग से स्टूडियो कार्यक्रम, वाद–विवाद, प्रश्नोत्तरी, पेंटिंग, फोटोग्राफी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सिंहस्थ

सिंहस्थ 2016, के अंतर्गत संस्थान द्वारा उज्जैन में ''सिंहस्थ 2016ः सार्वभौमिक सुगम्यता का मानचित्रण'' विषय पर सिंहस्थ के दौरान सुगम्यता के प्रचलित मापदण्डों/बिन्दुओं का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित परियोजना के अन्तर्गत है।

सिंहस्थ : वास्तुकला विभाग के अनुसंधान एवं विकास संबंधी कार्य

सिंहस्थ 2016 उज्जैन के अन्तर्गत उज्जैन नगर निगम ने योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल को महाकाल वन एवं भोपाल विरासत क्षेत्र के विकास संबंधी योजनाओं को आंकलन करने के लिए आमंत्रित किया गया। जिसमें योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल ने कई महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा कर अनुशंसाएँ प्रेषित कीं। इन अनुशंसाओं का क्रियान्वयन सिंहस्थ 2016 में परिलक्षित हुआ। इस कार्य में विभाग की ओर से प्रो. सविता राजे, आर्कि. रमेश भोले तथा आर्कि. सुशील कुमार सोलंकी ने अनुशंसाएँ प्रेषित कीं।

ज्ञान (GIAN)–1

शैक्षणिक नेटवर्क की वैश्विक पहल (ज्ञान) के तहत प्रथम कोर्स 16–20 मई, 2016 के दौरान एस.पी.ए. भोपाल में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रायोजित किया गया। प्रोफेसर एडम हार्डी, प्राध्यापक, कार्डिफ विश्वविद्यालय, ग्रेट ब्रिटेन द्वारा इसे संचालित किया गया। यह कोर्स ''इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चरः ड्राइंग फ्रॉम हिस्ट्री'' विषय के लिए समर्पित था। बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने इस कोर्स में भाग लिया जिसमें एस.पी.ए., भोपाल के शिक्षकों और छात्रों के अलावा मैनिट भोपाल के स्नातकोत्तर छात्रों ने भाग लिया। डॉ. अजय खरे तथा डॉ. विशाखा कवाथेकर, वास्तुकला विभाग, एस.पी.ए. भोपाल द्वारा इसका समन्वयन किया गया।

इंटीग्रल स्टूडियो

संस्थान में स्मार्ट सिटी के लिए स्मार्ट रेलवे स्टेशन (भोपाल रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास) विषय पर इंटीग्रल स्टूडियो का आयोजन किया गया। भोपाल रेलवे स्टेशन को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप व रेलवे मंत्रालय द्वारा स्टेशनों के पुनर्विकास करने के प्रस्तावों को ध्यान में रखते हुए संस्थान में स्मार्ट सिटी के लिए स्मार्ट रेलवे स्टेशन (भोपाल रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास) विषय पर इंटीग्रल स्टूडियो का सात दिवसीय आयोजन दिनांक 17 जुलाई 2016 से किया गया। इस आयोजन में विद्यालय के 300 छात्र तथा प्लानिंग व आर्किटेक्चर के शिक्षक सहभागी बनें।

डिजाइन स्टूडियो

एसपीए भोपाल की कार्यशाला करके सीखने का स्थान है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ भौतिक रूप से गहन जाँच, सतत बातचीत, मूलरूप एवं मॉडल का प्रयोग कर निष्कर्ष निकाले जाते हैं। छात्र यहाँ अपने विचारों को मजबूत कर कार्य की समझ बेहतर करते हैं। वे अपने मॉडल–बनाने एवं डिजाइन प्रोजेक्ट के मॉडल निर्माण के कौशल को उन्नत करने के लिये अपने विचारों और संवाद का सृजन करते हैं। गंभीरतापूवर्क, अंतःदृष्टिकोण एवं कलात्मकता से महान गहराई एवं महत्वाकांक्षा के साथ डिजाइन में लगे रहना इस अभ्यास के लिए छात्रों को प्रेरित करता है। यह एक ढाँचे की तरह हर संदर्भ की अनूठी स्थिति और प्रत्येक कार्य के व्यक्तित्व के जवाब में उनके कार्य को गाइड करता है। इस पद्धति के माध्यम से, वे अपनी टीम के साथ रणनीति, स्पष्टता एवं आपसी समझ की धारणा अपनाते है तथा विशेषज्ञों के सहयोग से प्रत्येक परियोजना का उच्च स्तर पर समाधान निकालते हैं।

एसपीए भोपाल की वास्तुकला कार्यशाला का क्षेत्र 280 स्क्वेयर मीटर का है। वास्तुकला के छात्रों के लिये प्रकाशित, हवादार एवं वातानुकूलित जगह कार्य करने हेतु तीन आयामी दृश्य धारणा विकसित करने, कार्यशाला मशीन और प्रौद्योगिकी सहित उपकरण और सामग्री की एक विस्तृत श्रंखला के साथ कार्य करने हेतु विशिष्ट स्थान है। छात्र साधनों के समुचित प्रयोग जैसे, उपकरण एवं मशीन, विभिन्न मॉडल बनाने में इस्तेमाल तकनीक, सामग्री के चयन के समुचित उपयोग जानने के लिए एवं विभिन्न सामग्री का उपयोग जैसे लकड़ी, एमडीएफ, पॉलीस्ट्रेन, फॉरेक्स, एक्रिलिक, मिट्टी, प्लास्टर ऑफ पेरिस का उपयोग, कागज एवं धातु आदि साधनों से सीख हासिल कर रहे हैं। वास्तुकला कार्यशाला में अभ्यास पाठ्यक्रम नियमित रूप से संचालन की श्रृंखला को दर्शाता है। इस संचालन व्यवस्था में डिजिटल प्रोटोटाइपिंग, रंग प्रसंस्करण एवं परिष्करण, प्लास्टर एवं धातु का कार्य शामिल है।

ज्ञान (GIAN)–2

शैक्षणिक नेटवर्क की वैश्विक पहल (ज्ञान) के तहत दूसरा कोर्स 25–29 जुलाई, 2016 के दौरान एस.पी.ए., भोपाल में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रायोजित किया गया। प्रोफेसर अर्नव चक्रवर्ती (डिपार्टमेंट ऑफ अर्बन एंड रीजनल प्लानिंग ऑफ यूनिवर्सिटी ऑफ इलेनॉइस एट उर्बना चम्पैग्न, संयुक्त राज्य अमेरिका) द्वारा इसे संचालित किया गया। यह कोर्स 'सिनेरियो एनालिसिस फॉर प्लानर्स एंड पॉलिसी मेकर्स' विषय के लिए समर्पित था। उनचास प्रतिभागियों ने इस कोर्स में भाग लिया जिसमें एस.पी.ए., भोपाल के शिक्षकों और छात्रों के अलावा मैनिट–भोपाल, एम एन आई टी, जयपुर, जे. एन.यू, नई दिल्ली के मास्टर और डॉक्टरेट के छात्रों ने भाग लिया। प्रोफेसर बिनायक चौधरी, योजना विभाग, एस.पी.ए, भोपाल द्वारा इसका समन्वयन किया गया।

वर्ल्ड आर्किटेक्चर फेस्टिवल

वास्तुकला के क्षेत्र में वर्ल्ड आर्किटेक्चर फेस्टिवल स्टूडेंट चैरेट वास्तुकला छात्रों को एक मंच प्रदान करता है। इस वर्ष वर्ल्ड आर्किटेक्चर फेस्टिवल 2015 की थीम "ऐंटीसिपेटिंग ऑफ अनएक्सपेक्टेड" थी।

इस प्रतियोगिता में हमारे संस्थान के 6 छात्रों को चुना गया और उन्होनें अपनी थीम "पास्ट, प्रजेन्ट एंड फ्यूचर रिइमेजिंग द सिटी ऑफ लेक" के लिए जीत हासिल की और संस्थान का नाम रोशन किया।

संस्थान से प्रो. संजीव सिंह भी छात्रों की इस उपलब्धि में उनके साथ वहाँ उपस्थित थे।

बर्कले निबंध प्रतियोगिता

बर्कले प्राइस निबंध प्रतियोगिता–2016 सेमीफाइनल सूची में लगभग 19 देशों के 25 छात्रों को चुना गया जिसमें हमारे संस्थान के 6 छात्रों को इस सूची में स्थान मिला तथा संस्थान के वास्तुकला विषय के तृतीय वर्ष के छात्र आयुष्मान केडिया ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कॉमनवेल्थ स्कॉलरशिप

यूनाईटेड किंगडम की कॉमनवेल्थ स्कॉलरशिप 2016 में संस्थान की वास्तुकला छात्रा विनीथा नल्ला चयनित हुई। यह छात्रा युनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन में अर्बन डिज़ाइन का अध्ययन करेगी। छात्रा की इस सफलता ने संस्थान को गौरवान्वित किया है।

वास्तुकला छात्र राष्ट्रीय संघ (नासा)

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 30 जनवरी से 7 फरवरी तक वास्तुकला छात्र राष्ट्रीय संघ (नासा भारत) का आयोजन श्री गीजू भाई छग्गनभाई पटेल वास्तुकला संस्थान सूरत (गुजरात) में आयोजित किया गया। इस वर्ष योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के 30 छात्र/छात्राएँ सम्मिलित हुए। नासा भारत का उद्देश्य वास्तुकला के छात्रों को शैक्षिक दृष्टि से ज्ञानवर्धन हेतु एक मंच प्रदान करना है। प्रत्येक वर्ष इस कार्यक्रम में देशभर के 400 से अधिक वास्तुकला विद्यालय सम्मिलित होते हैं।

इंटर एस.पी.ए. स्पोर्ट्स मीट

एस.पी.ए. भोपाल द्वारा प्रथम बार इंटर एस.पी.ए. स्पोर्ट मीट का आयोजन किया गया जिसमें एस.पी.ए दिल्ली एवं एस.पी.ए. विजयवाड़ा सहित एस.पी.ए. भोपाल ने अपनी भागीदारी रखी। प्रतियोगिता का आयोजन 4–6 मार्च 2016 को किया गया। जिसमें बॉलीबाल, फुटबाल, टेबल टेनिस एवं बैडमिंटन खेलों की प्रतियोगिताएँ हुई। प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह में सभी एस.पी.ए. की टीम अपने ध्वज एवं रंगबिरंगी पोशाकों में एकत्रित हुईं। प्रतियोगिता का शुभारंभ प्रभारी निदेशक महोदय एवं अधिष्ठाता (शैक्षणिक क्रियाकलाप) द्वारा मशाल प्रज्वलित कर किया गया। सभी खिलाड़ियों द्वारा मार्च–पास्ट किया गया। सभी प्रतिभागी टीमों ने अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन दिया।

प्रतियोगिता का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह प्रभारी निदेशक महोदय, अधिष्ठाता शैक्षणिक क्रियाकलाप एवं कुलसचिव महोदय एवं संस्थान के अन्य पदाधिकारीगण की उपस्थिति में किया गया। एसपीए भोपाल को ओवर ऑल चैम्पियनशिप ट्रॉफी प्रदान की गई तथा कार्यक्रम की मशाल एसपीए दिल्ली/विजयवाड़ा को सौंपी गई जिससे इंटर एसपीए स्पर्धा का आयोजन निरंतर चलता रहे।

फुटबाल	विजेता	एस.पी.ए. दिल्ली
	उपविजेता	एस.पी.ए. भोपाल
बैडमिंटन	विजेता पुरूष एवं महिला	एस.पी.ए. भोपाल
	उपविजेता पुरूष एवं महिला	एस.पी.ए. विजयवाड़ा
टेबल टेनिस	विजेता पुरूष	एस.पी.ए. दिल्ली
	विजेता महिला	एस.पी.ए. भोपाल
	उपविजेता पुरूष	एस.पी.ए. भोपाल
	उपविजेता महिला	एस.पी.ए. दिल्ली

इन्सपायर्ड टीचर्स का कार्यक्रम

दिनाँक 23–29 अप्रैल 2016 को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में देशभर से चयनित प्रेरित शिक्षकों का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस वर्ष इस कार्यक्रम में देशभर से 13 शिक्षकों को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षकों को एक सप्ताह तक राष्ट्रपति व विभिन्न केन्द्रीय मंत्रियों और वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों के साथ विभिन्न विषयों पर मंत्रणा, दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अन्तर्गत शैक्षिक संस्थानों का भ्रमण कार्यक्रम तथा राष्ट्रपति भवन के विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित होना आदि शामिल था।

इस गौरवान्वित प्रेरित शिक्षकों के कार्यक्रम में योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल से डॉ. (प्रो.) रचना खरे, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, वास्तुकला विभाग को आमंत्रित किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता (New York State Pavilion Idea Competition)

वास्तुकला विभाग के अध्ययनरत स्नातक छात्र (वर्ष 5) श्री ऋषि केजरीवाल तथा श्री शौर्य शर्मा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता New York State Pavilion Idea Competition by National Trust of Historic Preservation, US अपने डिज़ाईन 'Pavilion for the Community' हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया गया।

अफोर्डेबल हाऊसिंग योजना पुरस्कार

एम.पी. हाउसिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट बोर्ड द्वारा छात्रों के लिए 'सस्ती हाउसिंग स्कीमों के लिए विशिष्ट डिजाइन' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा एस.पी.ए भोपाल के छात्रों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता के लिए जूरी 4, अगस्त 2016 को आयोजित की गई थी। हमारे छात्रों ने बहुत अच्छी तरह से प्रदर्शन किया और कई पुरस्कार हासिल किये।
सुश्री सौम्या सिंह, बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर ने प्रथम पुरस्कार जीता और 25000 रुपये पुरस्कार राशि के रूप में प्राप्त किये। श्री सूर्यमणि कुमार, बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर और सुश्री अदिति अग्रवाल, मास्टर ऑफ प्लानिंग (पर्यावरण योजना) जीते और द्वितीय स्थान के लिए पुरस्कार साझा किया और प्रत्येक ने 10000 रुपये पुरस्कार राशि के रूप में प्राप्त किये।
माननीय श्री के.एम. मोघे, अध्यक्ष, एम.पी. हाउसिंग बोर्ड द्वारा उत्कृष्टता प्रमाण पत्र विजेताओं को उनके शानदार और रचनात्मक डिजाइन अवधारणाओं के सम्मान में दिया गया। श्री नीतिश व्यास, आयुक्त, एम.पी. हाउसिंग बोर्ड, और श्री एस. एस. राठौर, चीफ आर्किटेक्ट ने हमारे छात्रों को बधाई दी।

नियासा (NIASA)

वास्तुकला परिषद् (सी.ओ.ए.) की शैक्षिक इकाई NIASA (National Institute of Advanced Studies in Architecture) का इस वर्ष क्षेत्र–1 का बेस्ट थिसिस अवार्ड का आयोजन निरमा यूर्निवसिटी, अहमदाबाद में 11–13 अगस्त 2016 को किया गया था। इस प्रतियोगिता में योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल के वास्तुकला विभाग के छात्र श्री निपुण प्रभाकर (विषय "Post Riot Rehabilitation Using the Gandhian Frame Work of Values``) को क्षेत्र–1 का विजेता घोषित किया गया तथा इनका चयन राष्ट्रीय स्तर के अन्तिम चरण के लिए हुआ है।

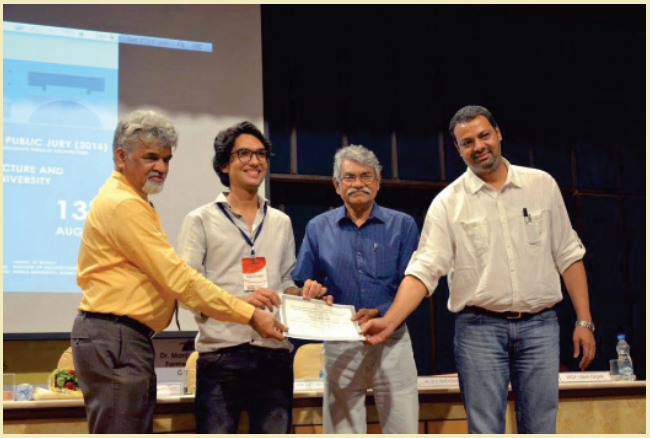

यूनिवर्सल डिजाइन

वास्तुकला विभाग में कार्यरत डॉ. संदीप संकट, एसोसिएट प्रोफेसर को एक सम्मान समारोह में बहु प्रतिष्ठित 7th NCPEDP- MPHASIS 2016 पुरस्कार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री श्री कृष्ण पाल गुर्जर द्वारा दिनाँक 14 अगस्त 2016 को नई दिल्ली में प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार यूनिवर्सल डिज़ाईन और विकलांगता के क्षेत्र में विशेष कार्य के लिए तीन श्रेणियों में प्रदान किया जाता है। डॉ. संकट को यह पुरस्कार वर्किंग प्रोफेशनल्स श्रेणी के अंतर्गत छात्रों को यूनिवर्सल डिज़ाईन और विकलांगता के क्षेत्र में प्रशिक्षित करने तथा यूनिवर्सल डिज़ाईन की अवधारणा के प्रचार–प्रसार में उनके योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

गणतंत्र दिवस

दिनांक 26 जनवरी 2016 को प्रातः 9 बजे से संस्थान में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में संस्थान के संकायगण सदस्य, प्रशासनिक स्टाफ व छात्र–छात्राएँ सम्मिलित हुए।

निदेशक (प्रभारी) महोदय ने ध्वजारोहण किया एवं संस्थान के सुरक्षा गार्ड द्वारा राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी गई। श्री संजीव सिंह ने सुगम्य भारत में एस.पी.ए की सहभागिता के विषय में, सिंहस्थ में एस.पी.ए. के छात्रों की सहभागिता के विषय में एवं संस्थान की आगामी कार्ययोजनाओं के बारे में सभा को जानकारी दी। श्री अजय खरे, श्री विनायक चौधरी, श्री निखिल रंजन मंण्डल ने संस्थान के छात्रों को अध्यक्ष, सचिव, खेल समन्वयक, सांस्कृतिक कार्यक्रम समन्वयक के पद की उपाधि दी।

संस्थान में आयोजित किये गए विभिन्न सांस्कृतिक, खेल प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया गया। विभिन्न राज्यों से आये अध्ययनरत छात्रों द्वारा अपने अपने क्षेत्रों का लोक नृत्य भी कार्यक्रम स्थल पर प्रस्तुत किया गया, इसके उपरांत संस्थान–गीत द्वारा कार्यक्रम का समापन हुआ।

स्वतंत्रता दिवस

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। निदेशक (प्रभारी) महोदय द्वारा झंडावंदन किया गया। समारोह में संस्थान के सभी छात्र–छात्रा, शिक्षक, अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित थे। छात्र–छात्राओं ने देश भक्ति से ओत–प्रोत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रंगारंग प्रस्तुति दी।

इस उपलक्ष्य में संस्थान द्वारा स्वतंत्रता दिवस पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, स्वतंत्रता दौड़ एवं बास्केट बॉल मैच का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में पिछले वर्ष हिंदी पखवाड़ा 2015 का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत दिनांक 1/09/2015 से हिंदी भाषा के ज्ञान के संवर्धन एवं व्यापक प्रचार प्रसार हेतु छात्र–छात्राओं, शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे निबंध, सुलेख, प्रशासनिक शब्दावली, टिप्पण, वाद विवाद, इत्यादि आयोजित की गईं, व इसमें संस्थान के सभी सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया, इसके समापन–समारोह के अवसर पर संस्थान के तात्कालिक निदेशक डॉ विनोद कुमार सिंह, मुख्य अतिथि डॉ. उर्मिला शिरीष, वरिष्ठ साहित्यकार, ने संस्थान की प्रथम हिंदी पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन किया। इसके अतिरिक्त हिंदी पखवाड़ा में आयोजित प्रतियोगिताओं के निम्नलिखित विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किये गये।

निबंध	प्रथम	श्वेता सक्सेना
	द्वितीय	निशा नायर
	तृतीय	जितेन्द्र कुमार, रेनु पाठक
सुलेख लेखन	प्रथम	गायत्री नंदा
	द्वितीय	आनंद किशोर सिंह नयना सिंह
	तृतीय	अभिनव श्रीवास्तव संदीप संकट
हिन्दी टंकण	प्रथम	प्रदीप हेडाऊ
	द्वितीय	सरिता पवार
	तृतीय	वीरेन्द्र श्रीवास्तव
अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद	प्रथम	प्रतिभा सिंह
	द्वितीय	सरिता पवार
	तृतीय	वीरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रशासनिक/ तकनीकी शब्दावली	प्रथम	सरिता पवार
	द्वितीय	आनंद किशोर सिंह
	तृतीय	मनीष व्ही. झोकरकर
कार्यालय टिप्पण/ हिन्दी प्रारूपण	प्रथम	आनंद किशोर सिंह
	द्वितीय	प्रदीप हेडाऊ
	तृतीय	सरिता पवार
तात्कालिक बोल	प्रथम	अजय विनोदिया
	द्वितीय	आनंद किशोर सिंह
	तृतीय	सुशील सोलंकी
वाद –विवाद प्रतियोगिता (छात्रों के लिए)	प्रथम	रूपेन्द्र रतन
	द्वितीय	आशिक राज
	तृतीय	सूर्यमणि, अभिषेक कुमार
कविता पाठ प्रतियोगिता (छात्रों के लिये)	प्रथम	ऋषभ पटेल अभिषेक गुप्ता
	द्वितीय	पीयूष कुमार सिसोदिया
	तृतीय	कुन्दन श्वेतांक

स्वच्छ भारत अभियान

"स्वच्छ भारत अभियान" के तहत संस्थान में महात्मा गांधी जी की जयंती के अवसर पर दिनांक 2 अक्टूबर 2015 को "स्वच्छ परिसर अभियान" का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम अपशिष्ट प्रबंधन समिति, कुलसचिव, डीन, एसपीए भोपाल के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों द्वारा संचालित किया गया। इस अभियान की शुरूआत परिसर में टॉप एंड टाउन के परिसर को साफ करके की गयी जिसमें लगभग 75 विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

स्वच्छता पखवाड़ा

स्वच्छ भारत के उद्देश्य को पूरा करने हेतु एस.पी.ए. भोपाल में भी स्वच्छता पखवाड़े का प्रारंभ दिनांक 16 मई 2016 से किया गया। पखवाड़े के प्रथम दिवस संस्थान के कुलसचिव महोदय ने संकाय सदस्य, अधिकारीगण व कर्मचारीगण को स्वच्छता की शपथ दिलवाई। इसके पश्चात संस्थान परिसर में स्वच्छता एवं साफ सफाई का कार्य प्रारंभ किया गया तथा सभी के सहयोग से यह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

संस्थान में 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' दिनांक 26–31 अक्टूबर 2015 के मध्य अत्यंत जोश एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस वर्ष सतर्कता जागरूकता का विषय ''सतर्कता निवारण ही सुशासन का उपाय है'' था। इस कार्यक्रम पर संस्थान ने सामान्य जागरूकता के लिए छात्रों की भागीदारी के साथ सुशासन के माध्यम से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए बहुत सी गतिवधियाँ की।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का प्रारंभ प्रो. चेतन वैद्य, निदेशक एस.पी.ए. भोपाल एवं श्रीमती सुनीता कोहली पूर्व

अध्यक्षा एस.पी.ए. भोपाल की उपस्थिति में छात्रों, शिक्षकों, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण द्वारा शपथ लेने के साथ किया गया। एक वाद–विवाद कार्यशाला का आयोजन भी भ्रष्टाचार और उसकी रोकथाम हेतु अपने विचारों को साझा करने एवं छात्रों के जीवन में नैतिकता की भूमिका जगाने के उद्देश्य से किया गया।

श्रीमती अनुराधा शंकर सिंह, भारतीय पुलिस सेवा, की उपस्थिति में संस्थान के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के साथ एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्रीमती सिंह ने भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया और युवा वर्ग से सभी स्तर पर भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु आगे आने के लिए अपील की। जागरूकता फैलाने के लिये छात्रों द्वारा पोस्टर प्रदर्शनी और नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

मातृभाषा दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में दिनांक 3 मार्च 2016 को मातृभाषा दिवस मनाया गया। उक्त दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्र निर्माण में मातृभाषा की भूमिका के संदर्भ में विभिन्न कार्यक्रमों (वाद विवाद, गायन एवं पोस्टर प्रतियोगिता) का आयोजन किया गया। वाद विवाद कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने आधुनिक जीवन में मातृभाषा का योगदान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वैश्विक प्रभाव मातृभाषा की भूमिका, देश की संस्कृति का उद्भव, निर्माण एवं विकास पर चर्चा की। संस्थान द्वारा नामित निर्णायक मण्डल ने सभी प्रतियोगिताओं का आंकलन किया। संस्थान के सभी कर्मचारी व अधिकारीगण व छात्र–छात्राओं ने इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक अपनी सहभागिता दर्ज की।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय में दिनांक 21–23 जून 2016 तक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के प्रांगण में किया गया। इस आयोजन में लगभग 100 लोगों के द्वारा योग किया गया। उपस्थित जनसमूह को सुविधा एवं सुरूचिपूर्ण ढंग से योग कराने के लिए मंच तैयार किया गया था जिस पर बैठ कर योग प्रशिक्षकों (विवेकानंद केंद्र भोपाल) द्वारा विभिन्न यौगिक मुद्राओं का प्रदर्शन किया गया जिनको देखकर समस्त जनसमूह ने उन क्रियाओं को दोहराया।

कार्यक्रम का आरंभ संस्थान के निदेशक (प्रभारी) डॉ अजय खरे एवं कुलसचिव राजेश मौज़ा की विशेष उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम में योगासनों की क्रियायें हुईं जिनमें निम्नानुसार यौगिक क्रियायें कराईं गईं:– ग्रीवा संचालन, घुटनों की क्रियायें, ताड़ासन, पादहस्तासन, अर्धचक्रासन, त्रिकोणासन, भद्रसनासन, शषांकासन, वक्रासन, मकरासन, भुजंगासन, शलभासन, सेतुबंधासन, पवनमुक्तासन, शवासन, कपालभाती, अनुलोम विलोम, भ्रामरी, ध्यान का अभ्यास कराया गया।

कार्यक्रम क्रमशः तीन दिन 21,22,23 जून तक नियत समय पर आयोजित किया गया जिसमें योग क्रियाओं के साथ–साथ प्रतिभागियों की पोस्टर एवं स्लोगन निर्माण की प्रतियोगिता भी सम्पन्न हुईं। कार्यक्रम का आरंभ संस्थान की सहायक कुलसचिव श्रीमती दीपाली बागची के उद्‌बोधन द्वारा तथा समापन विवेकानन्द केन्द्र भोपाल से आए योग प्रशिक्षकों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया।

कार्यक्रम में संस्थान की ओर से मुख्यरूप से अधिष्ठाता (शैक्षणिक क्रियाकलाप) श्री एन.आर. मण्डल एवं सह अधिष्ठाता (योजना एवं विकास) श्री सौरभ पोपली, उपकुलसचिव श्री शाजू वर्गीज़, सहायक कुलसचिव, श्री मनीष विनायक झोकरकर उपस्थित थे।

वृक्षारोपण

संस्थान में वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 25.07.2016 को सहायक प्राध्यापक आवास परिसर के पीछे बने पार्क में छायादार एवं फलदार वृक्षों का पौधारोपण किया गया।

इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी सदस्यों ने पौधारोपण कर आयोजन को सफल बनाया।

स्पिक मैके

स्पिक मैके (सोसाइटी फॉर प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एंड कल्चर अमंग यूथ) की गतिविधियों के अंतर्गत संस्थान के परिसर में दिनांक 30 सितंबर 2015 को एक संगीत संध्या का आयोजन किया गया जिसमें प्रसिद्ध संतूर वादक पंडित भजन सोपोरी एवं उनके सहयोगियों ने प्रस्तुति दी इस कार्यक्रम में संस्थान के छात्र, शिक्षक व कर्मचारीगण ने भारी संख्या में उपस्थित होकर संगीत संध्या का आनंद लिया।

प्रिशा

(God's Gift - प्रसाद)

क्या है प्रिशा?

यह SPA के छात्रों द्वारा बनाई गई एक योजना है जिसके अंर्तगत छात्र किसी खास विद्यालय को चुनते हैं एवं वहाँ पर विद्यार्थियों के साथ मिलकर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम कराते हैं जैसे पेंटिंग और क्राफ्टिंग आदि।

प्रिशा आखिर क्यों ?

प्रिशा का सबसे महत्वपूर्ण भाग यह है कि इस कार्यक्रम के तहत इन खास बच्चों के साथ रहकर इनकी मुश्किलों को अच्छी तरह से समझा जाता है, ताकि भविष्य में हम जो भी कार्य करें इनको ध्यान में रखकर करें एवं इसका सुनियोजित प्रलेखन भी किया जाता है जो कि दूसरों को भी मदद करे।

प्रिशा अब तक

इसे हमारे छात्र दो विद्यालयों में सफलतापूर्वक करा चुके हैं–

1) मिरियम स्कूल फॉर द मेंटल हैंडिकैप्ड, भोपाल में दिनांक 19 सितंबर 2015, जिसमें एस.पी.ए. से 46 विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विद्यालय का पूरा स्टाफ भी था। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को इन खास बच्चों के बारे में एक सीख देने वाला था। यह छात्रों के लिए एक यादगार पल भी था, जहाँ छात्रों ने विभिन्न क्रियाएँ कराईं।
   पेंटिंग, आर्ट एंड क्राफ्ट, योगा, रोलर स्केटिंग, आइस हॉकी, कैरम
2) जवाहर नवोदय विद्यालय, भोपाल में 30 जनवरी 2016, को 6वीं, 7वीं, 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ कार्यक्रम कराया गया जिसमें SPA, भोपाल रोट्रैक्ट क्लब की तरफ से 56 विद्यार्थियों नें वोलेन्टियरिंग की।

   इस बार छात्रों ने क्रियाओं को कक्षावार बांट दिया एवं एक प्रतियोगिता की तरह से आयोजित कराया।

पेंटिंग

पहले उन विद्यार्थियों के पेंटिंग के बेसिक के बारे में बताया गया। प्रतियोगिता के दौरान वोलेन्टियर्स ने भी विद्यार्थियों की मदद की साथ–साथ छात्र खुद भी मैनेजमेंट स्किल सीख रहे थे।

पेपर क्राफ्ट

इस कार्यक्रम को और ज्यादा आकर्षक बनाने के लिऐ छात्रों ने विद्यार्थियों को 10–10 की टीम में बांट दिया और सारी टीमों को 1 –1 वोलेन्टियर दिया, इन लोगों को साथ में मिलकर दिये हुए सामान से क्राफ्ट्स बनाने थे, परिणाम बहुत ही दर्शनीय थे।

कोलाज मेकिंग

पेपर क्राफ्ट की तरह इसमें भी टीम बनाई गई और सारी टीमों को 1 –1 वोलेन्टियर दिया गया, इस क्रिया में हर टीम को न्यूज पेपर से हैप्पीनेस थीम पर कोलाज बनाना था परिणाम बहुत ही दर्शनीय थे।

आगे भी ऐसी योजना चलती रहेगी ऐसी आशा है।

चित्रकला कार्यशाला

संस्थान परिसर में बने शिशुगृह में दिनांक 18 मार्च 2016 को चित्रकला कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में सभी बालक एवं बालिका ने भाग लिया। इस चित्रकला कार्यशाला का आरंभ संस्थान के सहायक प्राध्यापक आशीष पाटिल द्वारा सम्पन्न कराया गया।

कविताएँ

आभार

जिस–जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस–उस पथिक को धन्यवाद।
जीवन अस्थिर अनजाने ही, हो जाता पथ पर मेल कहीं,
सीमित पग डग, दूरी मंजिल, तय कर लेना कुछ खेल नहीं।
सुख–दुख के चलते दायें बायें, सम्मुख चलता पथ का प्रसाद,
जिस जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस उस पथिक को धन्यवाद।
सांसों पर टिकी काया, जब चलते चलते थक चूर हुई,
दो स्नेह भरे शब्द मिले, मिली नई स्फूर्ति, थकावट दूर हुई।
पथ के राही छूट गए, पर साथ–साथ चल रही यादें,
जिस जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस उस पथिक को धन्यवाद।
जो साथ न मेरा दे पायें, उनसे कब सूनी हुई डगर?
मैं भी न चलूँ यदि तो क्या, पथिक मर लेकिन राह अमर।
इस पथ पर वे ही चलते हैं, जो चलने का पा गये स्वाद,
जिस जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस–उस पथिक को धन्यवाद।
कैसे चल पाता यदि न मिला होता मुझको व्यापी अंतर?
कैसे चल पाता यदि मिलते, अमरता, तृप्ति, पूर्ण पहर!
आभारी हूँ मैं उन सबका, दे गये व्यथा का जो प्रसाद,
जिस जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस–उस पथिक को धन्यवाद।

अशोक कुमार मिश्र
पुस्तकालय सहायक

एहसास

गहरा नीला आकाश
और सूर्य का प्रकाश,

तुम मिले जब
खत्म हुई तलाश,

वो फूल भी खिला,
जे धूल में था मिला,

जुड़ा जब तेरा नाम,
गुमनाम नहीं ये लाश,

तारों से भरी रात,
बिगड़ी बन गई बात,,

आँखों में यूँ तेरा ख्वाब,
जैसे जिंदगी का एहसास,,

मौजूदा दौर भी अजीब,
तू दूर है पर करीब,,

खिलखिला उठी ये आँखें
अब तक थी जो उदास।

कुश श्रीवास्तव
लेखापाल

हमारा एस.पी.ए.

एस.पी.ए. की दुनिया है, बड़ी ही निराली,
हर दिन है होली और हर रात दीवाली।
आए हैं यहाँ बच्चे, देश के हर कोनों से,
जैसे महकता है आँगन, हर रंग के फूलों से।
स्टूडियो में हर दिन, कुछ नया ही ये करते हैं,
कभी रात भर किसी गंभीर विषय पर चर्चा करते हैं।
कभी सिनर्जी, कभी कलरव, कभी नासा, नोस्प्लान है,
कभी 'सावा', आइसोला, कभी स्पिक.मैके की शान है।
कभी पेंटिंग, कभी फोटोग्राफी, कभी स्वच्छ भारत अभियान हैं,
सीखने–बनाने की प्रतियोगिताएँ, हमारे पाठ्यक्रमों की जान हैं।
तीनों एस.पी.ए. की जब हुई खेल प्रतियोगिताएँ,
तो ट्रॉफी भी जीत लाए, हमारे बालक–बालिकाएँ।
एस.पी.ए. गान की गूँज, कानों को लगती है प्रिय,
हर दृश्य है मनोहारी, जो लगता है हमें आत्मीय।
एस.पी.ए. की दुनिया है, बड़ी ही निराली,
हर दिन है होली और हर रात दीवाली।

प्रतिभा सिंह
बहु प्रवीणता सहायक

क्यों आई हूँ ?

कभी सोचती हूँ कि मैं क्यों आई हूँ,
बहुत बड़ा नहीं तो, कुछ तो बड़ा करने आई हूँ।
दिल–ओ–दिमाग कहता है कि,
न कर सकी सारे जहाँ को रोशन
किसी की तो जिन्दगी को
रोशनी से भरने आई हूँ।
बाबा की आँखों में जो स्नेह के दिए हैं,
उन्हें फख्र के चिलमन बनाने आई हूँ।
जिसने उतारा है जमीं पर मुझे,
उसी देवता को खुद में जगाने आई हूँ।
चली गयी इस जहाँ से अगर मैं
तो मरकर भी अपनी छाप छोड़ने आई हूँ।

रेनु पाठक
पुस्तकालय सहायक

वृक्ष की वेदना

कोशिशें हो भले तुम्हारे स्वार्थ के विकास की.....
हम तो हैं खड़े मौन और देख रहे हैं प्रगति तुम्हारे विनाश की।
कभी बाजू, कभी धड़, कभी समूचे शरीर पर प्रहार किया,
कभी जलाकर, कभी बुझाकर, कभी सुखाकर वार किया,
छोड़ा नहीं कोई कोना, हर जगह मेरी तलाश की....
हम तो हैं खड़े मौन और देख रहे हैं प्रगति तुम्हारे विनाश की।
पथ बनाये तुमने, मंजिल बनाई, अंधेरी दुनिया में रोशनी जगाई,
नहरें बनाईं तुमने, खेती उपजाई,कृत्रिम सुख की तकनीक अपनाई,
सब कुछ बनाया तुमने सिवाय मेरे उपहास की....
हम तो हैं खड़े मौन और देख रहे हैं प्रगति तुम्हारे विनाश की।
मैने तेरी प्यास बुझाई, मैने तेरी भूख मिटाई,
मैने तुझको छाया दी, मैने तुझको माया दी,
मैने हर पल तुझे संवारा, तेरी धरती को निखारा,
बदले में कभी कुछ न चाहा, बस तृष्णा थी
थोड़ी सी भूमि और खुले आकाश की.....
हम तो हैं खड़े मौन और देख रहे हैं प्रगति तुम्हारे विनाश की।
मेरे संचालन से ये मण्डल है, मैं हूँ तो ये वायु और ये जल हैं,
सूखा, बाढ़ झेल चुका है मेरे घटने का परिणाम देख चुका है,
ग्लोबल वार्मिंग का खतरा है, प्रलय के निकट तू खड़ा है,
अब भी समय है संभल जा, दे दे जगह हमें अपने विकास की....
वरना हम तो हैं खड़े मौन और देख रहे हैं प्रगति तुम्हारे विनाश की।

सुनील कुमार जायसवाल
हिन्दी सहायक

माँ

जो दिया उसने दिया,
जो पाया उससे पाया,
जो सोचा उसने बताया,
जो किया उसने हौसला दिलाया
वो माँ है।
जो आशा बनकर रही,
जो अपनेपन की परिभाषा बनकर रही,
जो असीम सुख देती रही,
जो सारे दुख सहती रही,
वो माँ है।
जो साए की तरह साथ रही,
जो हमदर्द की तरह पास रही,
जो पल–पल को मधुर बनाती रही,
जो जीवन भर साथ निभाती रही,
वो माँ है।
जो पास रहे तो सुकून मिले,
आँसुओं में जिसका आँचल मिले,
जो है हर खुशी की वजह,
जो है हर दर्द की दवा,
वो माँ है।

स्वप्निल लौवंशी
कनिष्ठ सहायक

कलयुग

कलयुग बहुत बढ़ चुका आगे, कान्हा तुझको आना होगा।
घर–घर में अब कंस हो चुका, उनका मूल मिटाना होगा।
बहू–बेटियों की इज्जत को, तार–तार कर रहे लुटेरे
निर्दोषों की जान ले रहे, रोज करें उत्पात घेरे।
मानवता तो खत्म हो चुकी, धर्म नाम भी बचा नहीं।
बिन तेरे मैं किसे पुकारूं, कोई मुझको जंचा नहीं।
हर युग में बस एक बार का, नियम तुझे बदलना होगा।
हे माधव तुम्हें, पुनः धरा, पर इस युग में ही आना होगा।
गलती ना करना ओ केशव, चक्र सुदर्शन लेकर आना।
सीधे नहीं समझने वाले, गले चीर इनको बतलाना।
कहूँ कहानी तुझसे कितनी, तूने तो सब जाना होगा।
कलयुग बहुत बढ़ चुका आगे, कान्हा तुझको आना होगा।

वीरेन्द्र सिंह
वास्तुकार

हौसला

बढ़ने वाले कब किसकी फिकर करते हैं।
निगाहें मंजिल पे रख, हौसलों को बुलंद रखते हैं।

सफर में मिली मुश्किलों को जीत कर वो
बनाते ऐसी मिसाल, कि लोग ताउम्र
जिकर करते हैं।
बढ़ने वाले कब किसकी फिकर करते हैं.....

हम सफर मिले न मिले, कोई रंज नहीं,
राह में अकेले बढ़ने का वो हुनर रखते हैं।
बढ़ने वाले कब किसकी फिकर करते हैं.....

राह में बनती गईं जो यादें खट्टी–मीठी
उम्रभर अफसानों में इसका जिकर करते हैं।
बढ़ने वाले कब किसकी फिकर करते हैं.....

आनंद किशोर सिंह
अनुभाग अधिकारी

शादी

यारों तुम शादी मत करना, ये है मेरी अर्जी।
फिर भी हो जाए, तो ऊपर वाले की मर्जी।।
लैला ने मजनू से शादी नही रचाई थी।
शीरी भी फरहाद की दुल्हन नही बन पाई थी।।
सोचो यदि सोहनी को महिवाल मिल जाता, तो क्या होता।
कुछ न होता, यारो बस परिवार–नियोजन वाला रोता।।
मिश्रा जी तो सुबह–सुबह बच्चे नहलाते हैं।
शर्मा जी भी घर में झाड़ू रोज लगाते हैं।।
यादव जी तो हर शाम ढले मुर्गासन करते हैं।
आर्किटेक्ट हो या प्लानर सब पत्नी से डरते हैं।।
पत्नी के आगे आर्किटेक्ट कुछ भी नही बना पाता है।
पत्नी के आगे प्लानर की प्लानिंग धरी रह जाती है।।
पत्नी के आगे किसी की नही चलती मनमर्जी।
पत्नी से सब डरते हैं, अफसर हो या कर्मचारी।।
बहरे भी सुनते है, जब पत्नी गुर्राती हैं।
अंधे को भी दिखता है, जब पत्नी बेलन दिखलाती हैं।।
पत्नी अपने पर आ जाए तो सब कुछ कर सकती है।
कवि की सारी कविताएँ चूल्हे में धर सकती है।।
पत्नी चाहे तो पति का जीना दूभर हो जाए।
तोड़ दे करवाचौथ तो पति अगले पल ही सिधार जाए।।
शादी होते ही दोपाया–चौपाया हो जाता है।
ढेंचू–ढेंचू करके बोझ गृहस्थी का ढोता है।।
यारों तुम शादी मत करना, ये है मेरी अर्जी।
फिर भी हो जाए, तो ऊपर वाले की मर्जी।।

रिपन रंजन विश्वास
पुस्तकालय सहायक

हर खंडहर कुछ कहता है...

घने जंगलों के बीच या खुली वादियों में,
जहाँ एक मद्धम सा झरना बह रहा था।
मिल गया मुझे वहाँ इक टूटा हुआ खंडहर,
जिसका हर इक हिस्सा कुछ कह रहा था।
बिखरा हुआ था, कुछ थोड़ा उजाड़ भी,
अपने अतीत को खुद में संजोए होगा।
जो बीत गया खुशनुमा पल अतीत में,
उन यादों के साये में कुछ रोता भी होगा।
बंधनवार बंधे होंगे उसके द्वार पर कभी,
कभी नवजीवन की किलकारियाँ गूँजी होंगी।
सुहागन बनकर आई होगी राजकुमारी कोई
शायद आँगन से कोई अर्थी भी उठी होगी।
एक इंसान के हद से जो बाहर है शायद,
उतना इन पत्थरों ने महसूस किया है।
हर बार वक्त की मार में खा कर थपेड़े,
शायद कभी उफ तक भी न किया है।
शायद इन पत्थरों की भी है इक आवाज
जिसमे हर बीते हुए युग का बखान है।
दुःख है, सुख है, हास्य है, पीड़ा है,
अनगिनत पहेलियों की अनहद खान है।
कितने अनगिनत महल, मंदिर और किले की,
टूटी हुई दीवार से वक्त का झरना बहता है।
सुनकर भी अनसुना कर देते है हम अक्सर,
हकीकत में हर खंडहर कुछ कहता है।

सुशांत भारती
प्रथम वर्ष, संरक्षण स्थापत्य

अरबी कहावत

वह जो नहीं जानता है और जानता नहीं है कि वह नहीं जानता है, वह 'मूर्ख' है, उसे दूर कीजिए।
वह जो नहीं जानता है और जानता है कि वह नहीं जानता है, वह 'साधारण' है, उसे सिखाईए।
वह जो जानता है और नहीं जानता है कि वह जानता है, वह 'सो रहा' है, उसे जगाईए।
वह जो जानता है और जानता है कि वह जानता है, वह 'बुद्धिमान' है, उसे अनुसरण कीजिए।

सिस्टा श्रीनिवास राव
निज सहायक

आभी जाओ अल्लाह, आभी जाओ राम

आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम!
कैसा है ये कोहराम ?
कभी भी कोई अल्पविराम !
इंसानों से नही है चलती दुनिया,
अब आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम!

पत्थर से बन गए है, फूल वादियों के
मांग रहे हैं जमीन, सबकी जान लेके
इस खेल को अब कोई कैसे देखे ?
जब अमन हर सुबह, फिर चीखें क्यों हर शाम?
इंसानों से नही है चलती दुनिया,
अब आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम!

धर्म के नाम पर हैं छलते
धर्म के नाम पर करते राज
इन्सान ही इन्सान के कत्ल में मसरूफ आज!
क्यूँ है यह शोर, क्यूँ मचा है यह कत्लेआम ?
इंसानों से नही है चलती दुनिया,
अब आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम!

कैसा है ये कोहराम ?
कभी भी कोई अल्पविराम !
इंसानों से नहीं है चलती दुनिया,
अब आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम

सौरभ तिवारी
सहायक प्राध्यापक

मेरे पापा

करती है शिकायत वो मुझसे, पापा वापस आ जाओ।
माँ करती अब प्यार बहुत कम, इनको कुछ समझा जाओ।।
मुझे डाटती रहती हरदम, प्यार बांटती भैया को।
मुझे मिठाई एक ही देती, दो मिलती है भैया को।।
जब जब वो रोता है तो क्यों, मुझसे चुप नहीं होता।
माँ की गोदी में आने पर, क्यों वो कभी नहीं रोता।।
मुझे खेलने देती है, कि याद आपकी ना आए।
पर पापा पलकों से मेरी, छवि कहीं भी न जाए।।
मुझको छोड़ चले जाते हो, जब मैं सोती रहती हूँ।
पापा करके याद आपकी, अब मैं रोती रहती हूँ।।
तीन मिठाई मेरी वाली, लेकर जल्दी आ जाना।
माँ की आँखे भी गीली हैं, आकर वापस ना जाना।।

वीरेन्द्र सिंह
वास्तुकार

छायाचित्र (SAVA)

कुछ रह तो नहीं गया ....

जिंदगी के सफर में चलते चलते हर मुकाम पर यही सवाल परेशान करता रहा .... कुछ रह तो नहीं गया?
3 महीने के बच्चे को दाई के पास रखकर जॉब पर जानेवाली माँ को दाई ने पूछा .... कुछ रह तो नहीं गया? पर्स, चाबी सब ले लिया ना?
अब वो कैसे हाँ कहे? पैसे के पीछे भागते भागते .... सब कुछ पाने की ख्वाहिश में वो जिसके लिये सब कुछ कर रही है, वह ही रह गया है.....
शादी में दुल्हन को बिदा करते ही शादी का हॉल खाली करते हुए दुल्हन की बुआ ने पूछा .... '' भैया कुछ रह तो नहीं गया ना? चेक करो ठीक से। ...
बाप चेक करने गया तो दुल्हन के रूम में कुछ फूल सूखे पड़े थे। सब कुछ तो पीछे रह गया .... 25 साल जो नाम लेकर जिसको आवाज देता था लाड़ से.... वो नाम पीछे रह गया और उस नाम के आगे गर्व से से जो नाम लगाता था वो नाम भी पीछे रह गया .....
''भैया, देखा? कुछ पीछे तो नहीं रह गया?'' बुआ के इस सवाल पर आँखों में आये आंसू छुपाता बाप जुबाँ से तो नहीं बोला.... पर दिल में एक ही आवाज थी... सब कुछ तो यहीं रह गया....
बड़ी तमन्नाओं के साथ बेटे को पढ़ाई के लिए विदेश भेजा था और वह पढ़कर वही सैटल हो गया, पौत्र जन्म पर बमुश्किल 3 माह का वीजा मिला था और चलते वक्त बेटे ने प्रश्न किया सब कुछ चैक कर लिया कुछ रह तो नहीं गया? क्या जवाब देते कि अब छूटने को बचा ही क्या है.....
60 वर्ष पूर्ण कर सेवानिवृति की शाम पीए ने याद दिलाया चेक कर लें सर कुछ रह तो नहीं गया, थोड़ा रूका और सोचा पूरी जिन्दगी तो यहीं आने–जाने में बीत गई अब और क्या रह गया होगा।
शमशान से लौटते वक्त किसी ने पूछा ''कुछ रह तो नहीं गया?'' नहीं कहते हुए वो आगे बढ़ा .... पर नजर फेर ली, एक बार पीछे देखने के लिए .... पिता की चिता की सुलगती आग देखकर मन भर आया। भागते हुए गया, पिता के चेहरे की झलक तलाशने की असफल कोशिश की और वापिस लौट आया। ।
दोस्त ने पूछा.... कुछ रह गया था क्या? भरी आँखों से बोला... नहीं कुछ भी नहीं रहा अब... और जो कुछ भी रह गया है वह सदा मेरे साथ रहेगा।।
एक बार समय निकालकर सोचें, शायद पुराना समय याद आ जाए, आँखें भर जाएं और आज को जी भर जीने का मकसद मिल जाए।

दिनेश कुमार
पुस्तकालय सहायक

घूंघट

हमारे घर नई बहू आने वाली है। कितनी पढ़ी–लिखी है, पड़ोसन ने मुझसे पूछा तो मैं बोली "खूब पढ़ी–लिखी है मेरी बहू, आखिर बराबरी का रिश्ता है बेटे–बहू का"। जिस दिन नई बहू का गृह प्रवेश हुआ, तभी दीदी ने उससे कान में धीरे से कहा कि घूंघट ठीक से निकाल लो। पर उसकी हंसी अब भी झलक रही थी, तभी पड़ोसन बोली – "इसकी हंसी में तो जरा भी लज्जा नही दिखाई देती"।
अगले दिन मुँह दिखाई के लिये रिश्तेदार आए तो बहू सबसे मुस्कुराते हुए उनका हाल–चाल पूछती नजर आई तो मेरी भाभी बोली कि अपनी बहू को कुछ सिखाया नहीं तुमने, नई नवेली बहू की आँखें झुकी हुई होनी चाहिए, इसके सिर पर घूंघट का क्या फायदा। जब सारा कार्यक्रम समाप्त हो गया तो बहू उठकर अपने कमरे में चली गई तो उसका घूंघट नीचे आ गया, उसका खिसका घूंघट देख चाची बोली, कैसी बहू है घूंघट भी नही संभाल सकती घर क्या संभालेगी।
रात भर मेरे दिमाग में यही बात चलती रही कि जब वर्षों पहले मैं बहू बनकर आई थी तो मुझे भी बिना अपनी बात रखे, आँखें झुकाकर रहना पड़ता था। इस घूंघट की आड़ में स्त्री की खुशी और आजादी ढ़क दी जाती है।
प्रातःकाल उठते ही मैने बहू को बुलाकर आदेश दिया कि "आज से तू कभी घूंघट नहीं करेगी"।

मंजू यादव
सहा. प्राध्यापक

पानी राष्ट्रीय संपत्ति घोषित हो

साल दर साल गर्मी का मौसम पीने के पानी की विकराल होती समस्या से जूझते हुए बीतता है। पीने के पानी में विवाद के कारण हो रही हत्यायें अब हर साल का स्थायी भाव बन गया है। प्रशासन इससे निपटने के लिये दो फार्मूलों पर काम करता है। एक कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिये धारा–144 लगाना। दूसरा पीने के पानी की व्यवस्था करना। देश के लगभग हर प्रदेश में पेयजल परिवहन पर करोड़ों रुपये व्यय किये जा रहे हैं। पेयजल संकट, सूखा और अतिवृष्टि तरह प्रशासन का नियमित कार्य बन गया है। पेयजल संकट से निपटने के ये उपाय आने वाले वर्षों में पूरी तरह नाकाम हो जाएंगें क्योंकि व्यवस्था और समाज में ईश्वर की इस अमूल्य सम्पदा के प्रबंधन का विचार सिरे से गायब है। पीने के पानी की स्थिति बद से बदतर हो रही है और इसका भारी खामियाजा आने वाले समय में भुगतना पड़ेगा।

पीने के पानी की बदहाल स्थिति केवल मध्यप्रदेश तक सीमित नहीं है। अब यह राष्ट्रीय समस्या के रूप में तेजी से उभर रही है। समस्या का दु:खद पहलू यह है कि इस समस्या का अस्थायी समाधान करने के लिये युद्ध स्तर पर सक्रियता दिखाई देती है, अस्थायी समाधान कर दिया जाता है। लेकिन समस्या के स्थायी समाधान पर गंभीरता नहीं दिखाई जाती। इस बात को अब पूरी ईमानदारी से स्वीकार किया जाना चाहिये कि देश में जल संकट की मौजूदा हालत के पीछे पानी के प्रति हमारी आपराधिक लापरवाही और कुप्रबंधन ही जिम्मेदार है। प्राकृतिक जल स्त्रोतों के साथ खिलवाड़ और क्रूरता की सीमा तक भूजल का दोहन वर्तमान हाहाकार के लिये जिम्मेदार है। 11 वीं पंचवर्षीय योजना (2007–12) के लिये जल संसाधनों की स्थिति के अध्ययन के लिये नियुक्त योजना आयोग की समिति ने अपने निष्कर्षों में यह उल्लेख किया है कि पीने के पानी की देश की वर्तमान लगभग 56 अरब घन मीटर की आवश्यकता तेजी से बढ़ती हुई सन 2025 तक 73 अरब घन मीटर हो जायेगी। इसी तरह बढते औद्योगीकरण से वर्तमान 12 अरब घन मीटर पानी की वार्षिक आवश्यकता अगले 15 वर्षों में बढ़कर 23 अरब घन मीटर तक पहुंच जाएगी। सिंचाई के लिये भी 688 अरब घन मीटर की वार्षिक आवश्यकता अगले 15 वर्षों में बढ़कर 910 अरब घन मीटर तक जा पहुंचेगी। योजना आयोग की इसी रिपोर्ट में कहा गया है कि देश के 15 प्रतिशत विकास खण्डों में भूजल का दोहन भूजल स्त्रोतों की वार्षिक रिचार्ज क्षमता से अधिक किया जा रहा है जबकि 4 प्रतिशत विकास खण्डों में भूजल की रिचार्ज क्षमता की तुलना में 90 प्रतिशत अधिक जल का दोहन किया जा रहा है। भूजल स्तर गिरते ही कुओं को और गहरा करने पर ध्यान दिया जाता है।

बढती जनसंख्या और पीने के पानी सहित सिंचाई, उद्योग और जल विद्युत उत्पादन के लिये पानी की लगातार बढती मांग और घटती उपलब्धि विकास के सारे पहिये जाम कर देगी। इन चिंताओं के मद्देनजर उच्चतम न्यायालय ने पानी को लेकर आने वाले समय में भयावह परिस्थितियों की संभावनाओं को ध्यान में रखकर केन्द्र सरकार को वैज्ञानिकों को ऐसी उच्चाधिकार प्राप्त समिति गठित करने के निर्देश दिये हैं जो इस समस्या के स्थायी समाधान की दिशा में कार्ययोजना निर्धारित कर सके। लेकिन पानी से संबंधित समस्या का कोई भी समाधान सिर्फ वैज्ञानिक निष्कर्षों से नहीं किया जा सकेगा। अब जबकि पानी की बरबादी देश के लोगों की जीवन पद्धति बन चुकी है इसे उपदेशों, समझाईशों अथवा सामान्य उपायों से सुधारा नहीं जा सकता। पानी एक सीमित उपलब्ध संपत्ति है और वर्तमान परिस्थितियों में समय की यह मांग है कि पानी को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित कर दिया जाये। जल स्त्रोतों के सभी निजी अधिकार तत्काल प्रभाव से समाप्त कर दिये जायें। जब पानी राष्ट्रीय संपत्ति घोषित होगी तभी इसके संरक्षण और युक्तियुक्त उपयोग का मार्ग प्रशस्त होगा।

यह कितनी अजीब बात है कि कोई व्यक्ति अपने अहाते में ट्यूबवेल या कुंआ खोदकर उससे निकलने वाले पानी का मालिक बन जाता है जबकि उसमें आने वाला पानी धरती के वृहद् भूजल भण्डार से आता है। जिन नगरों और गांवों में पानी के लिये हाहाकार मचा हुआ है वहां भी ऐसे उदाहरण मिल जायेंगें, जहां निजी कुओं और हैण्डपम्पों के कथित मालिक पानी बेचने का व्यवसाय कर रहे हों। राष्ट्रीय संपत्ति घोषित होने पर ही जलाशयों को दूषित करने वालों, जल का दुरूपयोग करने वालों और कथित निजी जल स्त्रोतों से पानी का व्यापार करने वालों पर नियंत्रण किया जा सकेगा। पानी का राष्ट्रीयकरण कर इसे सार्वजनिक संपत्ति घोषित करके ही जल प्रबंधन के प्रति समाज में चिंता का संचार किया जा सकता है। अन्यथा जल संकट का सारा दोष सरकारों पर मढ़ने की समाज की प्रवृत्ति और अस्थाई उपायों का जुगाड़ करने की परम्परा चलती रहेगी।

आमिल खान
द्वितीय वर्ष, पर्यावरण नियोजन

जिया

जैसे ही मैं अपने मौसेरे भाई विमर्श के दिल्ली स्थित आवास में दाखिल हुआ, तो मेरी नजर एक दुबले अधेड़ उम्र के व्यक्ति पर पड़ी। वह व्यक्ति जाना पहचाना लग रहा था लेकिन याद नहीं आ रहा था कि कौन है। वह निरंतर मेरी तरफ देख रहा था। उसके चेहरे के भाव देखकर मैं पहचान गया कि वह जिया है। जिया को देखकर यादों का सैलाव मेरी आँखों के सामने उमड़ पड़ा।

जिया, जवाहर नगर, श्रीनगर में मेरी मौसी लक्ष्मी के घर में काम करता था वह एक बहुत सम्पन्न परिवार से संबंध रखता था। उसके भाई अच्छे शिक्षित थे एवं सरकारी नौकरी में उच्च प्रशासनिक पदों पर आसीन थे। जिया मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं था इस कारण वह पढ़ लिख नहीं पाया था। उसकी असाक्षरता के कारण भाइयों और उसके परिवार के सदस्य शर्मिंदगी महसूस करते थे। परिवार में उससे एक बीमार की तरह व्यवहार किया जाता था। उसे अपने घर के एकान्त कमरे में, जंजीरों से बांधकर रखा जाता था। अपने भाईयों के अत्याचार से बचने के लिए वह बार बार अपने घर से भाग कर लक्ष्मी के घर आ जाता था। लक्ष्मी जिया को माँ की तरह प्रेम करती थी वह उसकी दुर्दशा जानती थी इसलिए उसने जिया को अपने घर में आश्रय दिया। वह यहां छोटे मोटे काम करने लगा। जिया के भाई न उसे घर वापस बुलाना चाहते थे न कोई संबंध रखना चाहते थे।

जिया जवाहर नगर से हमारे घर किसी भी काम से हमेशा पैदल आता जाता था। वह हम सब के लिए घर के सदस्य की तरह था। हमारे घर से जवाहर नगर वापस जाने के लिए वह मेरी माँ से बस के किराये के नाम पर केवल एक या दो रूपये लेता था लेकिन हमने कभी उसे बस में जाते हुए नहीं देखा। वह किराये के पैसों से अपने लिए बीड़ी सिगरेट खरीदता था।

जब मैने उसे विमर्श के घर पर देखा तो मैं उसे पहचान नहीं पाया था क्योंकि वह बहुत कमजोर हो गया था और उसने अपनी दाढ़ी और मूंछ मुड़वा ली थी। उसने मुझसे कोई बात नहीं की लेकिन मुझे ऐसा लगा कि अजनबियों के बीच मुझे देखकर उसके चेहरे पर चमक आ गई थी। वह मुझसे कुछ नही बोला पर ईशारे से मुझे बताया कि उसे सिगरेट पीनी है। मैने दो रूपये निकाले ओर उसे दे दिये। और वह वहाँ से चला गया।

मैं फिर सोच में डूब गया। जिया अपने भाईयों द्वारा छोड़े जाने के बाद 20 सालों तक लक्ष्मी के घर रहा। जनवरी 1990 का समय था, कश्मीर से कश्मीरी पंडितों का पलायन हो रहा था। लक्ष्मी को परिवार समेत आधी रात को श्रीनगर छोड़ना पड़ा। श्रीनगर से जाने का यह निर्णय बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण था परिवार ने जिया सहित सब कुछ पीछे छोड़ दिया और दिल्ली आ गए।

लक्ष्मी केवल एक सूटकेस लेकर दिल्ली आयी थी। लक्ष्मी के साथ उसके पति एवं बड़े बेटे का परिवार था। लक्ष्मी का छोटा बेटा विमर्श पहले से ही अपने परिवार के साथ दिल्ली में रहता था। दिल्ली पहुँचकर वे विमर्श के आवास में चले गए। वह आवास बहुत छोटा था इस कारण लक्ष्मी के बड़े बेटे ने अपने एवं अपने माता पिता के लिये छोटा सा घर मयूर विहार में किराये पर ले लिया। एक महीने तक सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा था लेकिन अब पैसे का अभाव महसूस हो रहा था। उन्हें बाजार से सब कुछ खरीदना पड़ रहा था जो श्रीनगर वाले घर में उनके पास था। कारणवश लक्ष्मी ने श्रीनगर वाले घर से कुछ सामान लाने का निर्णय लिया। वह अपने घर से रोजमर्रा की वस्तुएँ लाना चाहती थी। लक्ष्मी जवाहर नगर स्थित अपने घर पहुँची। उसने पड़ोसियों की मदद से अपने घर के सामान की पैंकिंग कर ट्रक में रखवा दिया। वह जिया के बारे में पड़ोसियों से पूछताछ करने लगी। तब पता चला कि जिया ने एक बेकरी की दुकान में शरण ले रखी है। जब लक्ष्मी जाने की तैयारी कर रही थी, उसकी नजर दूर खड़े जिया पर पड़ी, जिया ट्रक को जाते देखकर रो रहा था एवं ट्रक के पीछे भागकर साथ ले जाने की गुहार लगा रहा था। लक्ष्मी अपनी भावनाओं को रोक नहीं सकीं और ट्रक रूकवा कर जिया को भी साथ ले आई। जिया के साथ दिल्ली पहुँचते ही उसके मन में एक बात आई कि आखिर जिया को रखेंगे कहाँ। चूँकि वहाँ सभी घरों का किराया महंगा था। लक्ष्मी ने विमर्श से जिया को घर में रखने का अनुरोध किया। विमर्श न चाहते हुए भी राजी हो गया। छोटी जगह होने के कारण जिया को दिन में घर के आसपास एवं रात में बाहर के बरामदे में सोने के लिये कहा गया था। उसे घर के अंदर आने की अनुमति कभी कभार ही मिलती थी। जिया अपने रोजमर्रा के खर्चों को भी नहीं पूरा कर पा रहा था। विमर्श जिया के साथ चिड़चिड़ा हो गया था और वह उसे हर बात पर डांटता रहता था। एक दिन विमर्श ने उसे वृद्धाश्रम में छोड़ने का मन बना लिया।

एक रात, विमर्श ने जिया को अपने साथ चलने को कहा। जिया बहुत खुश हुआ कि वह विमर्श के साथ कार में घूमने जा रहा है यह खुशी उसे एक लम्बे समय के बाद मिली थी। विमर्श उससे बड़े प्यार से मुस्कुराते हुए बात कर रहा था। विमर्श कार लेकर सीधे वृद्धाश्रम पहुँचा। जिया एक पल में समझ गया विमर्श उसे वृद्धाश्रम में छोड़ना चाहता है। जिया ने आश्रम के भीतर जाने से साफ मना कर दिया। विमर्श और आश्रम के कुछ कर्मचारी जिया को घसीटकर अंदर ले गये। जिया को वृद्धाश्रम में छोड़ने की सभी औपचारिकताएँ पूर्ण करने के बाद विमर्श वहाँ से चलने लगा। जिया विमर्श को उसे छोड़कर जाते हुए देख रहा था। विमर्श बहुत खुश था और बच्चों के लिए मिठाई लेकर अपने घर पहुँचा। वह जल्दी ही बिस्तर पर सोने के लिये लेट गया

लेकिन नींद कोसों दूर थी और जिया का चेहरा आखों के सामने बार बार आ रहा था। जिया ने उसे बड़ते देखा था और घर परिवार के अच्छे बुरे वक्त में हमेशा साथ रहा था। जिया के उम्र के इस पड़ाव पर जब उसे घर परिवार के भावनात्मक सहारे की सबसे अधिक जरूरत थी, उसे वृद्धाश्रम में अपने हाल पर छोड़ दिया गया था। अगली सुबह विमर्श जल्दी उठा और अपनी पत्नी से कहा कि वह गलत था उसे जिया को वृद्धाश्रम में नहीं छोड़ना चाहिए था उसकी पत्नी इस निर्णय से खुश हो गई। विमर्श आश्रम पहुंचा और जिया के बारे में पूछताछ करने लगा, जिया आसपास दिख नही रहा था। विमर्श आश्रम के कार्यालय में गया, तभी कार्यालय के अधिकारी ने कहा कि "अरे आप वह कल वाले बाबा के बारे में पूछ रहे हैं। वह तो कल रात आपके जाते ही गुजर गये। वह आपकी तरफ टकटकी लगाकर देखते रहे थे जैसे ही आप उनकी नजर से ओझल हुए वैसे ही बाबा के प्राण निकल गये"।

राजेश मौज़ा
कुलसचिव

जीवन एक संगीत

'जीवन', सुख और दुःख का अनोखा अनुभव!! जैसे जीवन एक अनुभव है वैसे संगीत भी। जीवन में संगीत का बहुत बड़ा महत्व है। आदिकाल से ही मनुष्य संगीत प्रेमी रहा है। मनुष्य के हर भाव में संगीत है। दर्द की सबसे बड़ी दवा है संगीत। संगीत में वो जादू है जिसे सुनते ही हम अपने आप में इतना डूब जाते है कि कभी कभी जिन्दगी के सारे दर्द भूल जाते है। संगीत में एक पवित्र भावना एवं स्नेह है जिससे मन प्रसन्न रहता है। जब हम बहुत उदास होते है और अकेलापन महसूस करते है, संगीत हमारे मन में शांति एवं आनन्द भर देते है। जब हम किसी से नाराज होते है और दुनिया से नफरत सी हो जाती है तब संगीत हमारे मन में प्रेम की दिव्य ज्योति जलाता है।

संगीत मनुष्य के मन में आनन्द भर देता है और जीवन में मनोरंजन लाता है। दिनभर काम कर थकने के बाद अगर हम संगीत सुनें तो मन को शांति मिलती है और थकावट भी दूर होने लगती है। संगीत सुनने से मनुष्य का ध्यान चिंताओं से हटकर शांति एवं आनन्दमय होने लगते है।

जीवन को स्वस्थ रखने में भी संगीत मदद करता है। प्रातः चलना या शारीरिक व्यायाम यदि हम संगीत के साथ करेंगे तो हमें थकावट महसूस नहीं होगी और लम्बे समय तक व्यायाम करने की प्रेरणा मिलेगी जिससे ऊर्जा मिलती है और मनुष्य अपने जीवन में हमेशा स्वस्थ्य रहता है।

मनुष्य के हर भाव से उनकी भावना में जन्म लेता है संगीत। संगीत में दुलार है, संगीत में सुख–दुख है, प्यार–मोहब्बत है, संगीत में भक्ति है और संगीत सत्य है। जीवन की हर अवस्था में संगीत की विशेष भूमिका है। बचपन में लोरी पसन्द आती है तो जवानी या यौवन में जुगल और पाष्चात्य संगीत और वृद्धावस्था में सत्संग या शास्त्रीय संगीत पसन्द आता है। संगीत हमें हंसाता–रूलाता है, सुलाता–जगाता है और मन में आनन्द भर देता है। संगीत सुनने से मनुष्य कभी पुरानी यादों में खो जाता है तो कभी आनेवाले पल के ख्यालों में डूब कर एक सुन्दर भविष्य की कल्पना करता है।

पृथ्वी के हर कण में संगीत है। हवाओं में, बहती नदियों में, बारिश की रिम–झिम में, पशु–पक्षियों की चहल–पहल में और पृथ्वी के कण–कण में संगीत है। ईश्वर का दिया एक अनोखा प्रतिभास है जीवन, तो ईश्वर का ही दिया गया वरदान है संगीत। जैसे ताल, लय, धुन और सुरों की अनुषासित संगम से एक मधुर संगीत बनता है वैसे ही जीवन में मनुष्य अपने अन्दर के हर भाव को अनुशासित रूप से संतुलित एवं सहज बनाये रखते हुए एक मधुर जीवन जी सकते है। जीवन का हर कठिनाई एवं मुश्किलों में संगीत हमारे मन को शांत एवं प्रसन्नता से भर देते हैं।

पृथ्वी पर जीवन के बिना संगीत नहीं और संगीत के बिना जीवन, तभी तो कहते हैं :

संगीत का रंग न हो तो नीरस है जीवन
सरगम का धुन न छिड़े तो सुना है ये मन आंगन
हर धड़कन में संगीत है
हर सांस में संगीत है
संगीत दिलों का उत्सव है
संगीत से नाचता है ये मन
क्योंकि ये जीवन एक संगीत है

बिन्दु सुरेश
कनिष्ठ सहायक

मेरा जीवन, सफलता एवं अनुभव

आज मैं खुद को बहुत गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि मैं जिस प्रतिष्ठित सरकारी संगठन में कार्य करता था, वह संगठन देश मे ही नही विदेशो में भी प्रख्यात है ।

मुझे वह दिन याद आते है जब मैंने सरकारी संगठन मे पदभार ग्रहण किया था। यहॉ का माहौल बहुत ही खुशनुमा एवं अच्छा था। यहाँ कार्यरत उच्च अधिकारी बहुत ही मिलनसार एवं सहयोग करने वाले व्यक्तियों में से थे। मुझे इस संस्थान से बहुत प्यार, स्नेह, महत्वपूर्णता एवं बहुत ही मान–सम्मान प्राप्त हुआ। इस संस्थान ने मेरी जिन्दगी ही बदल कर रख दी । जैसा कि कहाँ गया है "BOSS IS ALWAYS RIGHT" यह कथन बिल्कुल सत्य है। मैंने इस सिद्धान्त का पालन किया एवं सफलता की सीढ़ियॉ चढ़ता चला गया। कार्य करने के दौरान बीच में इस सिद्धान्त से मैं भट्क गया था जिससे मुझे हानि हुई तत्पश्चात मैंने अपनी भूल में सुधार किया फिर सफलता की सीढ़ियो पर चढ़ता चला गया एवं पीछे मुड़कर नही देखा। मैं ने बहुत से विभागों में कार्य किया। मेरे कार्य को मिनिस्ट्रीयल वर्क के लिए उतनी प्रशंसा नही मिली जितनी की टेक्निकल रिपोर्ट कार्य के लिए। मुझे आज भी याद है तब जब मैंने टेक्निकल रिपोर्ट कार्य प्रथम बार किया तब मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था और मुझे उच्च अधिकारी से ड़ॉट भी मिली। वह ड़ॉट मेरे दिल में चुभ गई तब मैंने टेक्निकल वर्क से संबंधित फाइलो को पढ़ना किया एवं एक के बाद एक सभी फाइलों को मैने पढ़ डाला एवं सभी इक्यूपमेंट पर होने वाले अलग–अलग परीक्षणो की रिपोर्ट मुझे मुँह जुबानी याद हो गई। इस कार्य हेतु मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी। इसके बाद मेरे कार्यो को उच्च अधिकारियों द्वारा सराहा जाने लगा। यह मेरी कामयाबी की प्रथम सीढ़ी थी । इसके बाद मैंने दूसरे टेक्निकल विभाग में कार्य करना शुरू किया। इस विभाग मे अलग–अलग परीक्षण किये जाते थे। मुझे यहॉ भी अपनी प्रतिभा का जौहर दिखाना था। मैंने सोचा कि यहॉ भी मुझे अपनी प्रतिभा का लोहा सिद्ध करना है, महत्वपूर्णता प्राप्त करनी है कि, इस विभाग में होने वाले परीक्षणो के दस्तावेज इस प्रकार से बनाऊ कि यहाँ के उच्च अधिकारियों को चकित कर दूँ तब मैंने दस्तावेजो को इस प्रकार बनाया कि सभी अधिकारियों के साथ–साथ विभागीय प्रमुख की आँखों में भी चढ़ गया, कहते है कि कड़ी मेहनत एवं सच्ची लगन से सीखा हुआ कार्य कभी विफल नही होता। यही मेरे साथ हुआ, मेरे द्वारा किये गये टेक्निकल कार्य की बहुत चर्चा हुई। मुझे बहुत मान–सम्मान प्राप्त हुआ।

मैं मिनिस्ट्रियल स्टाफ होने के बावजूद मेरे मिनिस्ट्रियल कार्य से ज्यादा टेक्निकल कार्य रिपोर्ट की ज्यादा प्रशंसा हुई। टेक्निकल कार्यो के परीक्षण दस्तावेज मुझे मुँह जबानी याद है कि किस इक्यूपमेंट / परीक्षण के दस्तावेज किस रूप में बनेंगे। उदाहरणार्थ : लाईटनिंग ईम्पल्स टेस्ट, टेस्ट विथ लाईटनिंग इम्पल्स चोप्पड आन टेल, टेस्ट विथ लाईटनिंग इम्पल्स नानें चोप्पड, टेम्पेरेचर राईज टेस्ट, एकुरेसी टेस्ट, कम्पोसिट इरर टेस्ट, पोलारिटी एण्ड टर्मिनल मार्किंग टेस्ट, हाई वोल्टेज टेस्ट, इन्डूयूस्ड ओवर वोल्टेज इंटरटर्न टेस्ट, टेस्ट सिकुवेन्स ए, बी, सी, डी, टेस्ट सिकुयेन्स–1,2,3,4,5 एवं सिंगल फेज ब्रेकिंग केपेसिटी टेस्ट, ट्रान्सफारमर पर रूटीन टेस्ट, मेकनीकल आपरेषन टेस्ट, इलेट्रिकल / मेकनीकल इन्डूरेन्स टेस्ट, टेम्परेचर एवं मिलीवोल्ट ड्राप टेस्ट, आईपी–55, 54, 53, 65, 33, 5x, x5, x3,6x, 3x 3 और पार्शल डिस्चार्ज टेस्ट इत्यादि ।

मुझे इस संगठन से बहुत मान–सम्मान प्राप्त हुआ है। मैं अपने लेवल के कर्मचारियों के साथ बहुत ही कम रह पाया हूँ, ज्यादातर अभियांत्रिकी अधिकारियों एवं संयुक्त निदेशक, उच्च अधिकारियों जो कि कुछ समय पश्चात यूनिट हेड / अपर निदेशक / महानिदेशक के पद पर आसीन हुये। उच्च अधिकारियों के टच में रहने के कारण मुझे बहुत सी उच्च स्तर की बाते सुनने एवं समझने को मिली जिससे मेरे सीमित ज्ञान को आधार मिला, जिस कारण मुझे अपने उच्च अधिकारियों से प्रशंसा प्राप्त हुई। मैं ज्यादातर विभागीय प्रमुख / यनिट हेड के डायरेक्ट सम्पर्क में ज्यादा रहा जिससे मेरे ज्ञान में वृद्धि हुई एवं मुझे मान–सम्मान प्राप्त हुआ ।

आज मैं जो कुछ हूँ इस आर्गेनाईजेशन की बदौलत ही हूँ। इस संस्थान ने मेरी प्रतिभा को निखारा जिससे मैंने जिन्दगी मे बहुत कुछ पाया। मैंने किताबों एवं अखबारों में पढ़ा था कि एक सफल व्यक्ति वह होता है जो 38 की उम्र तक कामयाबी, सफलता प्राप्त कर ले। मेरा भी लक्ष्य था कि 38 वर्ष की उम्र तक मुझे सब कुछ प्राप्त हो जाये जो कि एक कामयाब व्यक्ति की पहचान होती है। मेरा यह सपना इस संस्थान ने पूरा किया। यहॉ के उच्च अधिकारियों एवं प्रभारियों के सहयोग के कारण ही आज यह संभव हो पाया है। मैंने अपने अनुभव से यह महसूस किया है कि आदमी को कामयाबी, सुख समृद्धि उसके कार्य से मिलती है, कार्य से तात्पर्य है कि कार्य में क्वालिटी होनी चाहिए "क्योंकि कार्य तो एक मजदूर भी करता है परन्तु उसको कामयाबी / महत्वपूर्णता नही मिलती"। कहने का तात्पर्य है आपका कार्य अच्छा है और आप यह बात चार लोगो में कहते है कि मेरा कार्य अच्छा है, परन्तु आपके कहने से कुछ नही होता तब तक उच्च अधिकारी एवं ज्यादा से ज्यादा लोग यह कहे कि आपका कार्य अच्छा है। जो बात चार लोग कहे वह सही है न कि आपकी कही बात।

कुछ विभागों / अनुभागो में कार्यरत कुछ कर्मचारियों का यह कहना होता है कि हमारे विभागीय प्रमुख ठीक नही है । यह बात सरासर गलत है। मैंने अपनी सर्विस के दौरान यह महसूस किया है कि विभागीय प्रमुख अपने अधीनस्थ कार्यरत कर्मचारियों का पूर्णरूप से ध्यान रखते है, परन्तु यह कर्मचारियों की नासमझी है या उसका सीमित ज्ञान कि वह इस बात को समझ नहीं

पाते हैं एवं विभागीय प्रमुख की और उंगली उठाते है। उंगली उठाते समय वह कर्मचारी यह भूल जाता है कि एक उंगली अगर साहब की और उठी है तो चार अॅगुलिया उसकी ओर इशारा करती है ।
इसके अतिरिक्त यह भी कहना चाहूँगा कि किसी भी संगठन/कार्यालय में दण्ड का प्रावधान होना अति आवश्यक है। सरकारी मशीनरी एवं अन्य सरकारी कार्यो को सुचारू रूप से चलाने हेतु कर्मचारियों में दण्ड का भय होना अति आवश्यक है। दण्ड का प्रावधान न होने पर कर्मचारी मनमाने ढंग से कार्य करेगा और अनैतिक तरीको से लाभ अर्जित करने का प्रयास करेगा। दण्ड का भय उसकी मनमानियों पर लगाम लगाता है। किसी भी सरकारी सिस्टम को सुचारू रूप से चलाने हेतु दण्ड का प्रावधान होना नितान्त आवश्यक है।
इसी तरह वर्दी/यूनिफार्म के बारे में कहना चाहूँगा कि वर्दी/यूनिफार्म का हमारे मानवीय जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। वर्दी/यूनिफार्म हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु अग्रसर करती है । कर्मचारी में तन–मन–धन से कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करती है, उदाहरणार्थ सरहद पर खड़े सिपाही में उसकी वर्दी देशप्रेम/देशभक्ति की भावना जगाती है। देश के दुश्मनों से लड़ने की प्रेरणा देती है, अगर सरहद पर खड़े सिपाही को जोकर की वर्दी पहना दी जाये तो उसमें वह देशप्रेम/देशभक्ति की भावना नहीं आ पायेगी। वह एक सिपाही की तरह नही बल्कि एक जोकर की तरह व्यवहार करेगा ।
कहते हैं कि एक सफल व्यक्ति के पीछे किसी महिला का हाथ होता है यह कथन बिल्कुल सत्य है। मुझे सफलता 25 प्रतिशत ही प्राप्त हुई थी कि यकायक मेरी जिन्दगी में मेरी लक्ष्मी समान जीवन संगिनी मिली जिसकी पूजापाठ एवं उपवास एवं ईश्वर पर पूर्ण आस्था होने के कारण मेरी सफलता 25 प्रतिशत से बढ़कर 50 प्रतिशत हो गई। उसके बाद मेरे जीवन में हमारी देवी/लक्ष्मी समान प्रथम पुत्री ने जन्म लिया, जिससे घर में सुख–समृद्धि की बारिश होने लगी एवं सफलता का प्रतिशत बढ़कर 75 हो गया। पूर्णरूप से सफलता पाने के लिए 25 प्रतिशत और शेष थे जिसकी कमी द्वितीय देवी/लक्ष्मी समान पुत्री ने पूर्ण कर दी । जिससे सफलता शत–प्रतिशत प्राप्त हुई एवं जीवन हॅसी–खुशी चलने लगा।
मैं आज जिस स्थिति में हूँ वह अपनी देवी समान पत्नी एवं लक्ष्मी समान दो प्यारी–प्यारी पुत्रियों की वजह से हूँ। उनके बिना मेरा कोई अस्तित्व नही है, उनके बिना मैं एक पत्थर के समान हूँ।
जैसा कि हमारे भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम आजाद ने कहा है कि "देखो मगर छोटे नही बडे सपने देखो तथा उनको साकार करने के लिए कड़ी मेहनत एवं सच्ची लगन का सहारा लो" ।
मैंने भी इसका पालन किया एवं रात में सपने देख–देखकर सुबह उनको साकार करने के लिए कोशिश की जिसमें मुझे सफलता प्राप्त हुई। जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी ने बच्चों से कहा कि "जो भी हूँ पढ़ाई से हूँ" यह कथन पूर्णतः सत्य है, परन्तु मैं यह कहूँगा कि आज में जो भी हूँ। वह इस प्रतिष्ठित सरकारी संगठन एवं देवी/लक्ष्मी समान पुत्रियों के कारण हूँ।

गोपाल दिगम्बर
कनिष्ठ सहायक

स्वच्छता–एक अनुभूति

कुछ दिन पहले मैंने शाम को करीब सात बजे भोपाल के लिए नेवाई से रेल पकड़ी। उस दिन बहुत तेज बारिश हो रही थी। मेरे डिब्बे में और सात सह–यात्री थे। थोड़ी देर में एक मूँगफली वाला आया और सब लोगों ने उसे ख़रीदा। उनमें से एक सह–यात्री मूँगफली खाकर छिलका नीचे डालने लगी। यह देख कर मुझे बहुत बुरा लग रहा था पर यात्री एक महिला होने के कारण मैं कुछ बोल नहीं पा रहा था। केवल यही सोच रहा था कि माननीय प्रधान मंत्री जी की इतनी सारी कोशिश के बाद भी हम लोग अपने स्वभाव में बदलाव नहीं चाहते हैं।
उसके बाद मेरे बगल में बैठे सह–यात्री भी वही करने लगे। मैं भी अपना खाने लगा और छिलका एक कागज में रखने लगा। मेरे बगल में बैठे यात्री ने मुझे कहाँ जा रहे हो पूछा, मैंने भी उनको वही प्रश्न पूछा। उत्तर में वो भोपाल बोले। उसके बाद मैंने उनको बोला भाई साहब हम सारे लोग ऐसे कचरा यही फेंकेंगे तो कल सुबह भोपाल तक हमारे डिब्बे में ढेर सारा कचरा भर जायेगा। क्यों न हम सब लोग कचरा सही जगह में फेंके ताकि हमारा ये डिब्बा साफ सुथरा रहे।
मेरी इस बात पर वह तुरंत हाँ बोले और अपने चारों साथियों को समझा दिए। हम लोगो को देख कर वह महिला यात्री थोड़ा असहज महसूस की और धीरे से खुद को सुधार कर छिलका रेल के बाहर फेंकने लगी।
मेरा आप सब लोगों से यह अनुरोध है कि आप स्वच्छता की तरफ अपना सहयोग जारी रखें, साथ– साथ दूसरों को भी प्रोत्साहित करें और सब भारतवासी मिलकर, 2020 तक हमारे राष्ट्रपिता को ये श्रद्धा सुमन अर्पण करें। जय हिन्द !

राजेन्द्र कुमार जेना
सहायक–पुस्तकालयाध्यक्ष

प्यार हो जाता है

प्रस्तावना :– प्यार मानव जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जिससे मानव जीवन को अलंकृत (सुसज्जित) किया जाता है। प्यार ईश्वर की एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसका वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में कथाओं, रचनाओं और जीवन दर्शन के रूप में पढ़ने को मिलता है। ये हमें बताते हैं कि प्यार आज का नहीं करोड़ों वर्षों पहले भी होता था, आज भी है और कल भी रहेगा। बस बदलता है तो देखने का नजरिया बदल जाता है।

प्यार रूपी रंग यदि हमारे जीवन में नही होता तो शायद हम प्रकृति को इतनी सुन्दर दृष्टि से नहीं देख पाते। जीवन नीरस होकर कुंठित हो जाता, ज्ञान अधूरा एवं अशाब्दिक रह जाता। आज समाज में प्यार के मायने बदल गये हैं। प्यार के नाम पर मानसिक, शारीरिक एवं दण्डनीय अपराधों को प्यार का नाम दिया जाने लगा है।

प्यार का स्वरूप एवं स्वीकृति :– प्यार का स्वरूप यदि देखें तो सबसे पहले बच्चे एवं प्रकृति याद आते हैं। जिनके बगैर संसार अधूरा है। जो प्राणी प्यार न करे ऐसा शायद कोई नही अथवा दूसरे शब्दों में कहें प्यार सभी करते हैं कोई बच्चों से, कोई किताबों से, कोई काम से और कोई बेजुबान जानवरों से। प्यार शब्द छोटा अवश्य है परन्तु इसकी परिकल्पना ब्रह्माण्ड के नक्षत्रों से भी बड़ी है। दूसरे अर्थों में कहें तो प्यार अविवरणीय है। जो प्यार करता है उससे आप पूछिये आप कितना प्यार करते हैं तो नहीं बता पायेगा।

प्यार की स्वीकृति एवं स्वरूप जीवन ही बदल देते हैं। यह नये आयाम पर पहुंचाता है तो उच्च आयामों से नीचे भी ले आता है। मानव रूपी जीवन में जिस व्यक्ति ने प्यार को अपनाया और पाया है वह जीवन में सामान्य लोगों से कहीं आगे है। परिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण बदल रहा है प्यार से जीवन का स्वरूप बदला है। यदि हम दैनिक जीवन में ही देखें तो यदि हमारे पास कोई गाड़ी, किताब या कोई वस्तु जिससे आप को लगाव हो जाए आप उसे अपने से दूर नहीं कर सकते यह प्यार ही तो है।

प्यार के प्रभाव (सकारात्मक एवं नकारात्मक) :–

आज के गतिमान जीवन शैली में प्यार के अनेक प्रभाव समाज, परिवार एवं समूह पर देखने को मिलते हैं जिनमें से कुछ निम्न लिखित हैं:–

1. सकारात्मक प्रभाव :–
   - धन संचय (आवश्यकता के अनुसार वस्तुओं की खरीदारी)
   - मूक बधिर बच्चों का पोषण एवं पालन में सहायक
   - पशु हिंसा पर रोक में सहायक

मतभेदों का आदान प्रदान

उपरोक्त प्रभाव प्यार की अभिव्यक्ति के लिए सहायक है।

2. **नकारात्मक प्रभाव** :–
   - पारिवारिक बंटवारे एवं लघु जीवन आयु
   - सामाजिक विकृति, जातिगत अपराध, नारी शोषण

प्यार की अभिव्यक्ति एवं प्रकार :– प्यार की अभिव्यक्ति सुविचारों, सत्कर्म एवं ज्ञान से ही प्रदर्शित होती है। प्यार जीवन का मूलभूत आधार है।

''सादा जीवन उच्च विचार, प्यार है जीवन का आधार,
मिलता है जीवन में उसको, जिसने किया सभी का सत्कार''

उपसंहार :–

''प्यार आवश्यकता नहीं एक कुंजी है।
जिसको जितना खर्च करो उसको उतना ही मिलता है।''

ये सही है कि किसी एक विशेष व्यक्ति के न रहने से किसी की जीवन रूपी गाड़ी नहीं रूकती लेकिन ये भी सच है कि लाखों लोग मिलकर भी उस एक व्यक्ति की कमी को पूरा नहीं कर सकते जिसको आप प्यार करते हैं।

जितेन्द्र सिंह
तकनीकी सहायक

कल किसने देखा

प्रस्तावना :– एक बहुप्रचलित कथन और सर्वाधिक प्रचलित कथन ''कल किसने देखा'' आशा, निराशा एवं कई भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। कल किसने देखा, कल क्या होगा, क्या पता कल हो न हो। कथन अनेक परन्तु अर्थ एक। कल किसी ने नही देखा पर कल को जानना सभी चाहते हैं। कल को देखना चाहते हैं, जीना चाहते हैं और इसीलिए आज कल का इंतजार भी करते हैं। इस प्रतियोगिता के माध्यम से मैं इस कथन के प्रति अपने विचार साझा करती हूँ।

व्याख्या :– कल शायद किसी ने न देखा हो पर देखने की जिज्ञासा कई रखते हैं कई तो दावा भी करते हैं कि वो आने वाला कल देख सकते हैं। परन्तु हमारे जैसे कुछ लोग कल की कल्पना भी करते हैं। शुरूआत हमारे फिल्मी जगत से करते हैं। भारतीय सिनेमा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सिनेमा से जुड़े कई निर्देशकों/लेखकों/कलाकारों ने इस मुद्दे को लेकर अपने–अपने तरीकों से दर्शकों को कल के बारे में बताने की कोशिश की है। अधिकतम में कलाकार कल को देखने का दावा भी करते हुए दिखे हैं पर सबकुछ काल्पनिक, सत्यता नहीं। कुछ की कल्पना को दर्शकों ने सराहा है तो कुछ दर्शकों की कल्पना से भी परे थी।

जहाँ एक ओर सिनेमा जगत में कल की कल्पना होती है वहीं दूसरी ओर हमारे कुछ महान संत/बाबा आदि ये दावा करते है कि वो कल को देख सकते है। वो हमारा कल इस सृष्टि का कल देखने का दावा करते हैं और हम यकीन करते हैं। हम यकीन करते हैं उसके बाद पता चलता है कि सच में तो वो सिर्फ अपना कल संवार रहे थे हम तो अभी भी वही हैं।

वैसे, अगर देखा जाये तो सिनेमा जगत हो या बाबा संत सबसे ज्यादा कल को देखने का दावा हमारे माँ–बाप करते है बच्चे का आज देखकर कल के बारे में बता देते हैं माँ का पसन्दीदा कथन '' आज पढ़ नहीं रहा है, कल कबाड़ बेचेगा तू'' पर हम इतना व्याकुल क्यों होते है कल को जानने के बारे में? इस व्याख्यान से मेरे मन में कुछ पंक्तियाँ आती हैं।

''कह दो आज से न कोशिश करें'' कल की गिरहा में झाँकने की बहुत चालाक है ये कुछ न बतायेगा।।
जी ले आज को ऐ दोस्त जीभर कर। भरोसा रख, कल कई नई सौगात लेकर आयेगा।।

उपसंहार : सच तो ये है कि '' कल'' सिर्फ हमारी कल्पना है वास्तविक कल तो न कभी किसी किसी ने देखा है और न कोई देख पायेगा। क्योंकि कल कभी आता ही नही है। जो है बस आज है। जो होता है बस आज ही होता है। ''कल'' की योजनाएं जरूर बनाई जाती है परन्तु वे योजनाएं ''आज'' में ही लागू होती हैं यह सच है। फिर कुछ पंक्तियाँ मेरे दिमाग में विचरण करती हैं :

''भीगले आज की बारिश में ए दोस्त।
कल किसने देखा, बारिश की बूँदों में नमी हो न हो''।।

कल को जानने में समय न बर्बाद करते हुए, आज को जियें आज को संवारें, कल खुद ब खुद समझ आ जायेगा।

स्वाती बिलैया
कनिष्ठ सहायक

पानी बनाम पैसा

सब जानते हैं कि जल ही जीवन है और जीवन तो अमूल्य है। इस नजर से देखें तो जल अतुलनीय है। फिर भी मानव स्वभाव ने हर युग में हर किसी की तुलना पैसे से की है। परंतु जल कोई वस्तु नहीं इसलिए इसकी तुलना करना बड़ा दयनीय है।

जिन श्रीमान के पिता ने उन्हें सिखाया था बार–बार
"बेटा पैसा पानी की तरह मत बहाओ"
उन्हीं श्रीमान का बेटा नल खुला देख कर बोला–
"पापा, पानी को पैसे की तरह मत बहाओ"
युग बदल सकता है परंतु जल का अस्तित्व नहीं बदल सकता।

मंजू यादव
सहा. प्राध्यापक

दर्द का एहसास

जब दिल में खुशी और होठों पे मुस्कान हो तो हर चीज हसीन नजर आती है. हरी हरी पत्तियों पर ओस की बूँदें मोतियों जैसी खूबसूरत लगती हैं. पर जब वही बूँदें आँसुओं की तरह मायूस दिखें तब चाहते हुए भी दर्द छुपाया नही जा सकता।

दर्द हमें ताकत देता है. खुशियों को सराहने का जज्बा देता है. अपने दर्द का एहसास हमें दूसरों के दर्द को समझने का तजुर्बा देता है।

विरह का दर्द, व्यथा का दर्द, रिश्तों में तनाव का दर्द, रोग का दर्द, गरीबी का दर्द, यह सब एक अजीब सी शक्ति प्रदान करते हैं, हमें एक बेहतर इंसान बनाते हैं. अपने दर्द का एहसास यदि दूसरों को बाधा पहुँचता है तो निश्चित ही दर्द और भी गहरा हो जाता है. यूँ तो मनुष्य के जीवन में दर्द किसी न किसी रूप में मौजूद रहता है, पर उसका किस प्रकार से वह सामना करता है यह उस व्यक्ति की किस्मत बदल देता है।

गौतम बुद्ध सिद्धार्थ से बुद्ध बने क्योंकि उन्हें लोगों के दर्द का एहसास हुआ. उनके माता–पिता ने बहुत कोशिश की पर उन्हें संसार के सत्य और दुखों से दूर नही रख पाए. परिणाम स्वरूप लोगों की गरीबी, बुढ़ापा, बीमारी आदि की तड़प देखकर उन्हे उनके दर्द का एहसास हुआ और उन्होने उस एहसास को सही दिशा देकर ज्ञान पाया भी और संसार को अपने ज्ञान से प्रकाशमय भी किया।

आज बच्चों का मनोबल बहुत जल्दी टूटने लगता है क्योंकि वे सिर्फ जीत की उम्मीद रखते हैं और हार से हार जाते हैं। जीवन का अंत करना हार का अंत करना नहीं, हार को विजयी बनाना है. हमारे संसार में दर्द कुछ कम होगा यदि हम स्वयं भी हारना सीखें और आने वाली पीढ़ी को भी हारना सिखायें. जीत के जश्न के साथ हार की मायूसी को भी बर्दाश्त करना सिखायें।

दर्द का एहसास सबके पास, ना डूबें इसमे, ना मानिए हार।
सब कुछ छोड़ें, न छोड़ें आस, जीत छुपी है, हार के उस पार।।

दर्द हमें कमजोर बनाता है पर यदि दर्द के एहसास को हम अपनी ताकत बना लें तो मायूसी भरे विचार और प्रवृत्ति से हम दूर हो सकते हैं. ''जीवन में दर्द'' आवश्यक है पर ''दर्द में जीवन'' हानिकारक है.

निशा नायर
लेखापाल

होनहार छात्र का फेन्टासटिक निबंध लेखन

हिंदी की परीक्षा में "भाखड़ा नांगल डैम" पर निबंध लिखने को आया। परीक्षा दे रहे एक छात्र ने इस निबंध को किस तरह लिखा आप भी पढ़िए।

भाखड़ा नांगल डैम सतलज नदी पर बना हुआ है। सतलज नदी पंजाब में है। पंजाब सरदारों का देश है। सरदार पटेल भी एक सरदार थे। उन्हें भारत का लौह पुरूष कहा जाता है। लोहा टाटा में बनता है। टाटा हाथ से किया जाता है। कानून के हाथ बड़े लंबे होते हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू भी कानून जानते थे। उन्हे बच्चे चाचा नेहरू के नाम से पुकारते थे। चाचा नेहरू को गुलाब बहुत पसंद था। गुलाब 3 किस्म के होते हैं। पीने वाला शरबत, खिलने वाला और गुलाबरी होता है। गुलाबरी बहुत मीठा होता है। मीठी तो चीनी भी होती है। चीनी अक्सर चींटी खाती है। हाथी को चींटी से सख्त नफरत है। लंदन का हाथी बहुत विख्यात है। लंदन जर्मनी के पास है। जर्मनी का वार बहुत फेमस है। वार 8 तरह के होते हैं– सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार और वर्ल्डवार। वर्ल्डवार बहुत खतरनाक होते हैं। खतरनाक तो शेर भी होता है। 40 सेर का एक मन होता है। मन बुहत चंचल होता है। चंचल मेरे पीछे बैठती है। चंचल मधुबाला की छोटी बहन है। मधुबाला ने फिल्म शक्ति में काम में काम किया है। शक्ति मुट्ठी में होती है। पंजाबी पंजाब में रहते हैं। पंजाब में भाखड़ा नांगल डैम है।

घनश्याम राय
कनिष्ठ सहायक

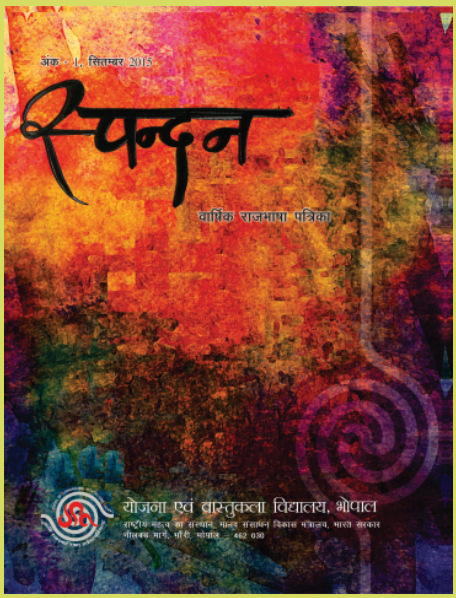

स्पन्दन प्रथम अंक

स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

अंक 2, सितम्बर 2016

राजभाषा समिति

अध्यक्ष
चेतन वैद्य, निदेशक

राजेश मौज़ा, कुलसचिव
विशाखा कवाठेकर, सहायक प्राध्यापक
अश्फाक आलम, सहायक प्राध्यापक
शाजू वर्गीज़, उप कुलसचिव
राजेन्द्र कुमार जेना, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
वृषभानलली रघुवंशी, सहायक प्राध्यापक
मनीष वी. झोकरकर, सहायक कुलसचिव
अमित खरे, सहायक कुलसचिव
दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव

सम्पादक मंडल
अश्फाक आलम, प्रधान सम्पादक
आशीष पाटिल, संपादक
राजेन्द्र कुमार जेना, सम्पादक
अमित खरे, सम्पादक

प्रुफरीडर
प्रतिभा सिंह, बहुप्रवीणता सहायक
कुश श्रीवास्तव, लेखापाल

सहयोग
सुनील कुमार जायसवाल, हिन्दी सहायक
रिपन रंजन विश्वास, पुस्तकालय सहायक
रेनु पाठक, पुस्तकालय सहायक

मुख्य पृष्ठ अंकन एवं छाया चित्र
आशीष पाटिल, सहायक प्राध्यापक

अंतिम पृष्ठ अंकन
विशाखा कवाथेकर, सहायक प्राध्यापक

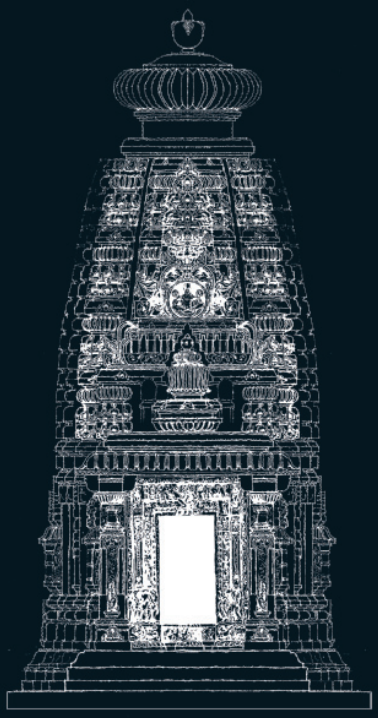

आशापुरी मंदिर परियोजना

आशापुरी मंदिर परियोजना योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल और ब्रिटेन की कार्डिफ यूनिवर्सिटी के वेल्स स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर के द्वारा वर्ल्ड मॉन्यूमेंट फंड से मिली राशि से किया। आशापुरी मंदिरों का समूह रायसेन जिले की गौहरगंज तहसील में स्थित है। इस परियोजना के अंतर्गत दोनों संस्थानों ने मिलकर मंदिरों के अवशेषों का अध्ययन कर इनका डॉक्यूमेंटेशन तैयार किया है। 26 मंदिरों में से तीन मंदिरों का मूल डिजाइन भी तैयार किया गया है। इन मंदिरों के निर्माण मे लगभग 200 वर्ष का समय लगा होगा। अध्ययन के दौरान मंदिर के 100 वर्ग किमी के दायरे में 70 ऐसी साइट को भी चिन्हित किया गया जो पुरातत्व विज्ञान की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है।

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

नीलबड़ रोड, भौरी, भोपाल (म.प्र.) - ४६२ ०३० (भारत)

Website : www.spabhopal.ac.in

मुद्रक : अनुपम मुद्रण 9425025574